THE SKETCHES OF INDIAN CHRISTIANS.

भारतवर्षीय खीष्टियानों का जीवन वृत्तान्त ।

Christian Literature Society for India,
United Provinces Branch.

1910.

1st *Edn*. 2,000.

Price { *Paper cover 2 annas* 1,500.
{ *Half cloth bound 4 annas* 500.

रल्या राम साहिब।

कदापि आपने रल्या राम का नाम सुना होगा वह एक बहुत प्रसिद्ध मसीही थे जो खत्री कुल में उत्पन्न हुए। यह तो विदित नहीं कि उनके पुरखे कहां के रहनेहारे थे पर इतना जानते हैं कि यह घराना सन् १८४७ से अमृतसर में बास करने लगा और उन्हीं का जन्म भी वहीं हुआ शिक्षा भी वहीं पाई और इम्तिहान भी पास किया और अंगरेजी पाठशाला में आप एक मास्टर थे इनके और भी मित्र थे जो इनके समान सत्यधर्म्म की खोज में लगे रहते थे परन्तु इतना साहस इन को न था कि सभों के सामने निडर होकर सत्य को मान लेवें जब हम सत्य शब्द का प्रयोग करते हैं तो हमारा मतलब ईसाईधर्म्म से है और उस धर्म्म का मूल तो प्रभु ईसा मसीह ही है "जो तुम मेरे बचन में बने रहो तो सचमुच मेरे शिष्य हो और तुम सत्य को जानोगे और सत्य के द्वारा से तुम्हारा उद्धार होगा" क्योंकि "मैं ही मार्ग औ सत्य और जीवन हूं बिना मेरे द्वारा से कोई पिता पास नहीं पहुंचता है"। जब रल्या राम की यह दशा थी उसी समय बाबू केशव चन्द्रसेन का दौरा अमृतसर में हुआ और अपने नये धर्म्म ब्रह्मो समाज पर कई व्याख्यान दिये इन सब को रल्या राम ने सुना और बिचार किया कि इस धर्म्म में तो हिन्दू और ईसाई दोनों धर्म्म मिल जाते हैं कदापि यही ग्रहण योग्य है पर पूरी २ शांति उस्से न पाई। हां उत्तम बातें तो सबही धर्म्मों

में पाई जाती हैं कहावत है कि "मीठो लगे न मांस, लोन बिन फूहड़ राध्यो"। नमक बिना सब फीका रहता है जब हमारा मित्र और उस के साथी ऐसी दशा में पड़े थे तब उन्होंने यह नियम बांधा कि मिशन के गिरजे में आके प्रार्थना करें और ईश्वर से सहायता प्राप्त करें पर बार बार पीछे हट जाते थे। ऐसी दशा बहुधा लोगें को हुआ करती है। संसार शरीर और पाप उनको सत्य के ग्रहण करने से रोकता है। अफसोस उस बहादुर योद्धा पर जो लड़ाई के मैदान में जाकर पीछे देखे। पर समय आया कि रल्या राम प्रभु को अपना त्राण-कर्त्ता माने। वह सन् १८७० और मार्च महीना था। उन्होंने अपने मित्र मुनसिफ शेरसिंह बजवा को एक खत लिखा कि मैं २८ वीं मार्च को बपतिस्मा पाके प्रभु ईसा मसीह का चेला हुआ चाहता हूं। वह यह चाहते थे कि हम दोनों एक ही साथ बपतिस्मा लेवें शेरसिंह साहिब कुछ दूर रहते थे और समय पर हाजिर न हो सके इस लिये रल्या राम साहिब ने सभों के सन्मुख प्रभु को अपना गुरुमाना परन्तु उन के मित्र ने भी १२ अप्रैल को आके बपतिस्मा पाया। दोनों का अवश्य बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ होगा। रल्या राम अपने माता पिता के बड़े आज्ञा पालक थे। अच्छी तनखा पाते थे क्योंकि वह एक पास किये हुये अंगरेजी के मास्टर थे। तनखा पाने पर अपना सारा रुपया माता पिता के हाथ में सोंप देते थे पर देखिये कि जिस दिन उन्होंने प्रभु को ग्रहण किया उसी दिन वह घर से निकाले गये केवल बारह आने के पैसे उनके जेब में थे, क्या उन्होंने कोई बुराई की थी, नहीं, कभी नहीं, केवल सत्य को ग्रहण किया था। हमारे देश की दशा पर हम को बड़ा ही शोक होता है पर जो १९०० बरस पहिले

प्रभु ईसा मसीह ने कहा सो सच है कि "मनुष्य के घर ही लोग उसके बैरी होंगे" ॥

माता पिता और और लोग छोड़ देवें पर परमेश्वर जो उस पर बिश्वास करता है आशीष देता है सन् १८७२ में उन्होंने वक़ालत का इम्तिहान पास किया और अपने इस काम को बड़ी सच्चाई और ईमानदारी से चलाया कि वह अपनी सच्चाई के लिये बहुत ही प्रसिद्ध हो गये यहां लो कि सरकार भी झगड़े सुलझाने के लिये पंचायतों में उन्हें मुखिया ठहराती थी और ऐसी दशा में दैालत तो मानों उनका पानी भरती थी ॥

रल्या राम कई बातों में एक नमूना है:—मसीही होने के पहिले उनके भाईबन्दों ने उन पर बार २ यह दबाव डाला कि अपनी बालक लड़की की मगनी जैसे कि ऊंच जाति के हिन्दुओं की रीति है कर देवें परन्तु उन्होंने ऐसी कुरीति न मानी और यह अति अवश्य है कि जो लोग समझदार और ज्ञानी हैं वे ऐसी बुरी रीतों को उठा देवें। कुछ काल के पीछे उनके बड़े यत्न से उनकी पत्नी और एक भाई ने भी प्रभु को ग्रहण किया और उनकी माता भी जो २१ बरस तक उन से दूर रही वह भी अपने पुत्र के पास फिर आई। जैसी बहुधा इस देश के बिद्यार्थियों की दशा है वह रल्या राम साहिब की न थी। वह अपने जीवन भर विद्यार्थी की दशा में रहे बातों के बिचारने और नई नई पुस्तकों के पढ़ने में सदा लगा रहते थे। जिस बिषय का वर्णन जो चाहता था उन से पा सक्ता था मानो वह औरों के लिये भंडार से थे। सन् १८९२ में वह केवल दो दिन के रोग में स्वर्ग को प्राप्त हुये। रोग के होने पर अपनी सचेतता के समय उन्होंने

अपने घर का सब हिसाब किताब ठीक किया जिससे पीछे कोई बखेड़ा न हो। मरने के कुछ पहिले अपनी बेटी से १०३ रा गीत पढ़वाया जिस को कि यहां हम लिखते है "हे मेरे प्राण परमेश्वर को धन्य कह और सब जो मुझ में है उसके पवित्र नाम को। हे मेरे प्राण परमेश्वर को धन्य कह और उसके सारे उपकारों को न भूल। जो तेरे अधर्मों को क्षमा करता है जो तेरे रोगों को चंगा करता है" आदि। और एक उरदू भाषा में गीत भी गवाया जिस का आरम्भ इस तरह से है॥

रह मेरे साथ जल्द, हुआ चाहती शाम,
खुदावन्दा, रह मेरे साथ मुदाम।
दिल हो बेचैन, न कोई रहे साथ,
बेकसके हामी, रह तू मेरे साथ॥

यह ज़िन्दगी जल्द गुज़र जाती है,
और उस की खूबी जल्द मुरझाती है।
सब कुछ है बातिल, उससे खेंचूं हाथ,
तू बे तबदील है, रह तू मेरे साथ॥

इस प्रकार ईश्वरका धन्यवाद करता हुआ यह प्रेमी भक्त अपना प्राण त्याग के अपने प्रभु के संग जा रहा। एक योग्य और बुद्धिमान महाशय जो उनको भली भांति जानते थे इस प्रकार से उनके बिषय लिखते हैं "कि इस बुद्धिमान वकील ने यीशु मसीह पर बिश्वास करने के कारण अपनी जवानी में बड़ा दुःख सहा अपने घर से निकाला गया अपने माता पिता का

धिक्कार और भाईबन्दों के क्रोध की बरदाश्त की। माता ने उसको मरा समझ के बरसों लों भेंट भी न की इस प्रकार की परीक्षायें यदि उसके लिये बड़ी दुःखदाई थीं पर शांति से सब सहीं और उसके प्रभु ने इसी संसार में उसको बड़ी २ आशीषें दीं जैसा लिखा है "वह उस पेड़ के समान होगा जो जल की धारों पर लगाया गया जो अपना फल अपनी ऋतु पर देगा और उसके पत्ते न मुरझायेंगे और जो वह करेगा सब भाग्यवानी से करेगा॥

यदि चाहें तो और भी ब्यान उनके मन की शांति, उदारता और दया के कामों का जो उन्होंने बार २ प्रसन्नता से किये यहां कर सक्ते हैं पर उन में से हम दो एक बातें कहेंगे उन के एक छोटे भाई जिन का नाम नारायण दास था कई बरसों के बाद ईसाई हुए और वह भी प्रभु के सच्चे भक्त थे। इससे दौलत राम को जो उनके दूसरे भाई और बड़े पक्के हिन्दू थे बहुत बुरा लगा। और नारायण दास को बपतिस्मा देने के सबब सब ने पादरी साहिब पर कचहरी में नालिश की। मुकद्दमा तो खारिज़ हो ही गया पर पेशी के समय दौलत राम ने अदालत में रल्या राम को देख लिया। और भरी अदालत में उनकी पगड़ी गिरा दी। कोई हिन्दू अपने बड़े भाई का ऐसा निरादर न करेगा पर रल्या राम साहिब ने सबर से प्रेम के साथ सह लिया॥

——:0:–:0:——

गुरु चरण बोस साहिब।

——:0:0:–:0:0:——

यह साहिब अपने जीवन का वर्णन इस रीति से करते हैं कि मैं १ जनवरी सन् १८२६ में कलकत्ता नगर के उत्तरीय भाग में उत्पन्न हुआ। मेरा पिता बड़ा सज्जन और आदर योग्य मनुष्य था और हमारा घराना कलकत्ता में उस समय आके बसा था जब कि मुसलमानों का राज था और मरहटे बड़ी लूटपाट करते थे यहां लों कि हमारी खेती और गाय बैल बकरी आदि का बचना कठिन था। ऊंच जाति के कायस्थों की रीति के अनुसार जब मैं छः बरस का हुआ तो मेरे पिता ने मुझे पढ़ने को भेज दिया। अपने गुरु से मैंने अपनी भाषा का लिखना पढ़ना और हिसाब करना भली भांति सीख लिया। इसी तरह मैं उसके पास चार बरस तक सीखता रहा। अब दश बरस का हुआ और बंगला भाषा भी भली भांति जानने लगा सो मेरे पिता ने मुझे एक ऐसी पाठशाला में भेज दिया जिस में अंगरेजी और बंगला दोनों भाषा सिखाई जाती थीं। यह हेअर साहिब की पाठशाला कहलाती थी क्योंकि वही इस की नीव डालनेवाले और बन्दोबस्त करनेवाले थे। उनका नाम बहुत प्रसिद्ध है। यहां मैं पांच बरस तक शिक्षा पाता रहा। चौदह बरस की उमर तक मैं पक्का हिन्दू था। और हिन्दुओं की नाईं मूर्त्तिपूजा और रीति व्यवहारों में मेरा मन बहुत लगता था पर ईसाईधर्म्म को मैं अच्छी तरह से नहीं जानता था। पर इस समय जब मैं १५ बरस का होने लगा तो ईश्वर के अनुग्रह से कुछ मेरी आंखें

खुलने सी लगीं। शिक्षा जो मैंने हेअर साहिब के पाठशाला में पाई थी मेरी समझ में रोशनी देने लगी। मैंने जाना कि ईश्वर आत्मा है। उसको हम देख नहीं सक्ते और उसकी पूजा और सेवा और ही प्रकार की है। मूर्त्तिपूजा गुड़ियों का खेल, और अज्ञानता से उत्पन्न हुई है। अब मेरा बिश्वास तो हिन्दूधर्म्म से डिग गया, क्योंकि आत्मिक प्यास बुझाने के लिये उस में कुछ नहीं है। मैंने जान लिया कि मैं पापी हूं पाप की इच्छा मुझ पर प्रबल होने लगी। वह मेरी शक्ति से बाहर थी सो मैं उस पर जय न पा सका न अपने ज्ञान ध्यान से उन बुरी इच्छाओं को रोक सकता था। अब मेरा आसरा केवल ईश्वर की दया और कृपा पर रहा है, कि वह मेरे मन को शुद्ध करे, और मेरी बुरी इच्छाओं को रोके, और मुझे अपनी संगत में लेवे। पर यह शक्ति न हिन्दूधर्म्म और न किसी और संसारी धर्म्म में पाई जाती है। ये सब तो यह कहते हैं, कर्म्म करो, कर्म्म करो, भले कर्म्म करो, पर मुझ में तो कोई अच्छे कर्म्म करने की शक्ति ही न थी। "क्योंकि वह अच्छा काम जो मैं चाहता हूं मैं नहीं करता हूं परन्तु वह बुरा काम जो नहीं चाहता हूं सोई करता हूं"। इस प्रकार की दशा जब मेरे मन की हो रही थी तो मैंने मूर्त्तिपूजा करनी बिलकुल छोड़ दी और एक सभा का मेम्बर हो गया जो अपने को परमेश्वर का माननेहारी बताती थी और जिस के मेम्बर आज़ादी से ईश्वर बिषयक बातों पर वाद विवाद एकट्ठे होकर किया करते थे। वे ब्रह्मो समाज के मेम्बरों की नाईं एक ईश्वर पर तो बिश्वास रखते थे परन्तु किसी धर्म्मपुस्तक को बिलकुल न मानते थे। उनकी शिक्षा का तात्पर्य्य हिन्दुओं के स्वभाव सुधारने, मिलनसारी करने

और ज्ञान बढ़ाने का था। परन्तु वे ईसाईधर्म्म और बेवल के ज्ञान के भारी बिरोधी थे, जिस के बिषय उनका ज्ञान बहुत धुंधला और बेठिकाने था वे अदृश्य स्वर्ग और और पदार्थों के बिषय जिन को ईश्वर ने अपने भक्तों के आनन्द के लिये ठहराया है कुछ भी चिन्ता न करते थे उनकी समाज में कभी कभी बड़े बड़े विवाद होते थे केवल वे एक दूसरे के बिरोधी थे परन्तु फल कुछ न निकलता था॥

हां वे एक परमेश्वर पर बिश्वास तो करते थे पर इसके साथ ही साथ यह भी मानते थे कि हम नहीं जानते कि वह है अथवा नहीं उनका मतलब यह था कि हम को इस बात की कुछ चिन्ता नहीं। और जिस दशा में कि उनका यह भी बिश्वास था कि ईश्वर ने मनुष्य की अगुवाई के लिये कोई शास्त्र दिया ही नहीं है तो पाप के रोग को नाश करने का और पापी को उसके पाप के बोझ से हलका करने का वे कोई उपाय बता न सक्के थे। पाप का दुःख सब से भारी है और ईश्वर का धर्म्म यही है कि पापी पाप की बुराई और उसकी अशुद्धता से छुटकारा पावे और उसको ऐसी शक्ति मिले कि वह उससे घिन्न करे और पाप को निश्चय पाप ही समझे और नित्य आगे बढ़ता जावे। पापों की क्षमा शुद्धता, और पवित्रता और वह शक्ति ईसा मसीह प्रभु के द्वारा प्राप्त हो सक्ती है। पर इस बात पर बिचार करना और पूछ पाछ करना और सत्य को ग्रहण करना बहुत अवश्य है। ऐसी हालत को देखकर मेरे मन में तनिक भी चैन न था और मैं नहीं जानता था कि कौन मुझे शुद्ध करेगा। मेरे मन में वह शांति बिलकुल न थी जो मैंने ईसाई होने पर पाई। परन्तु याद रखना चाहिये कि मैं ईश्वर को ऐसा

मानता था कि वह प्रार्थनाओं का सुननेहारा और उत्तर देनेहारा है इस लिये मैं उससे सदा यह प्रार्थना करता रहता था कि हे परमेश्वर मेरा अगुआ हो और मुझे बता कि सच्चाई क्या है। और कहां मिलेगी। मैंने बैबल और और क़िताबें जिनसे मेरे मन का बोझ हलका हो, पढ़ना आरम्भ कर दिया और जो विद्वान हिन्दूधर्म्म को छोड़कर ईसाई हो गये थे, उन से और पादरी साहिबों से भी मित्रता की। और निःसन्देह सच्चाई के खोज करने में उन से बड़ी सहायता पाई। इस प्रकार की खोज में लगे तार तीन बरस तक करता रहा और अब मुझे यह निश्चय हुआ कि ईसाईधर्म्म निःसन्देह ईश्वर की ओर से ठहराया गया है और हर एक देश के लोगों के लिये है कि वे ईसा मसीह के द्वारा पाप के बंधन से छुटकारा पावें। हे प्यारे पढ़नेहारे टुक ठहर के सोच कि ईश्वर प्रार्थना सुनता है। देख उसने मेरी सुनी मेरी आत्मिक आंखें खोलीं धीरे २ मेरे मन से सब अविश्वास और सन्देह दूर हुये। अंधियारा नाश हुआ और भोर के सूरज की किरन ने मेरे मन को उजाला किया। मुझे मालूम हुआ कि मुझ बिचारे पापी की दशा केवल मसीहीधर्म्म से सुधर सक्ती है। उस प्रभु की कैसी अपार दया है कि उसने क्रूस पर अपना प्राण देकर पापियों को मुक्ति देने के लिये सहज उपाय निकाल दिया और क्रूस पर अपनी बहुमोल मृत्यु के द्वारा ईश्वर के न्याय और दया को पूरा किया॥

मसीह ने दुःख जो सहा था • मसीह का खून जो बहा था।
सो गुनाह का कफारा है • और मेरी जान का चारा है॥

प्रभु ईसा मसीह के जीवन और मौत से और उसके मौत पर जय पाने से मेरे दिल पर बड़ा असर हुआ और मैंने

बड़ी शांति पाई। और अच्छी तरह से बैबल शास्त्र पढ़ने से मुझे यह भी मालूम हुआ कि ईसा मसीह का धर्म्म कोई नया धर्म्म नहीं है और उसका जीवन कोई बनावटी बातें नहीं है। वह आदि धर्म्म है और उसकी सब बातें इतिहास से साबित हैं। और आज कल बहुत सी बातें और भी खुलती जाती हैं। अध घट गगरी भलकत जाय। आज कल के अध पढ़े लोग इन बातों की कुछ चिन्ता नहीं करते। वे सोचते भी नहीं पर बैबल के बिषय में ऐसी बे जड़ अनोखी बातें कहते हैं जिन से ईश्वर के भक्तों के मन में दुःख होता है। यदि वे सोचें तो यह जानेंगे कि ईसाईधर्म्म तब ही से है जब से सृष्टि हुई कोई धर्म्म संसार में इससे प्राचीन तो है ही नहीं। यदि आप तनिक तरफदारी छोड़कर इस बात की खोज करेंगे तो ऐसा ही पावेंगे। पर लोग अचेत हो रहे हैं उनको पाप से छुटकारा पाने और अपने प्राण बचाने की चिन्ता जरा भी नहीं है॥

अठारह बरस की उमर में मेरा इस बात पर पूरा बिश्वास हो गया था कि बैबल शास्त्र ईश्वर की तरफ से है। और वह किसी एक देश के लोगों के लिये नहीं है। बल्कि सारे जगत के और हर हालत के लोगों के लिये है। उसके आदि ही में प्रेम के लक्षण पाये जाते हैं और यदि आप देखें तो यह जानेंगे कि ईसा मसीह का सारा जीवन पूर्ण प्रेम से भरा है। न मेरी अकल में न कलम में और न हाथ में यह शक्ति है कि उस प्रेम का पूरा पूरा बखान करूं। सुसमाचार को पढ़िये, और आप ही देखिये, और इस में आप की ईश्वर सहायता करेगा कि यह जाने कि ये बातें सच हैं अथवा नहीं॥

अब मेरा हाल कुछ और भी सुनिये। अब मैं पूरे १८ बरस का हो गया था और मेरा पूरा २ यकीन हो गया था कि बैबल ईश्वर का बचन है। मेरे दिल में यह बात गड़ गई थी कि ईसा मसीह मेरे पापों और सारे जगत के पापों के लिये क्रूस पर घात किया गया है। मैं अपने बिश्वास को सभों पर जाहिर करता था और यह भी पूरा इरादा कर लिया था कि निडर होकर सभों के सामने बपतिस्मा के द्वारा उस को अपना मुक्तिदाता मान लूं। इस बात को सुनकर मेरे कुटुम्बी और मित्र बहुत ही डर गये। वे दिन रात मुझे हर तरह से सताने लगे। वे यह चाहते थे कि किसी न किसी तरह से मुझे मसीही होने से रोकें हर तरह से मेरी चौकसी करते थे, मेरी बैबल और और पुस्तकें जो उस समय मेरे पास थी छीन कर उन्होंने आग में जला दीं और मुझे यह हुक्म दिया कि अगर तुम ईसाइयों और पादरियों से बात चीत करोगे तो भारी दण्ड पाओगे। तौभी ऐसे संकट और दुःख के समय मेरा ईमान प्रभु ईसा मसीह में कम न हुआ बल्कि बढ़ता ही गया। मैंने अपने मन में ठाना कि घर से भाग कर कहीं पनाह लूं। इस बात के लिये मैंने अपने मसीही मित्रों से सलाह ली सो उन्होंने मुझे सन् १८४२ में शिवपुर के बिशप साहिब के कालेज में भेज दिया। स्मरण रखना चाहिये कि मेरी शादी भी हो चुकी थी, मैंने अपनी पत्नी को समझाया कि वह मेरे साथ इस बिश्वास में भागी होवे पर वह अभी तक बहुत समझदार न थी इस लिये वह मेरे साथ आने से राजी न हुई। मैंने यह समझा था कि बिशप साहिब के कालेज में जाने पर मैं इस सताव से बचकर कुशल से रहूंगा पर अफसोस कि यह उसके बिरोध हुआ। क्योंकि

एक दिन दोपहर के समय कोठे पर बैठा हुआ मैं अपनी बैबल पढ़ रहा था तो एका एकी मेरा छोटा भाई ऊपर चढ़ आया और मुझ से कहा कि भाई मा और घर के और लोग तुम्हें देखने कलकत्ते से नाव में आये हैं उठो चलके उन से भेंट करो। कोई धोखा न समझ कर और माता का नाम सुनकर मुहब्बत में आकर मैं उसके साथ घाट पर चला गया जहां नाव लगी थी और नाव में बैठ गया। चारों तरफ से रिश्तेदारों और मा ने मुझे घेर लिया वे रो २ और चिल्ला २ के और मुझे लिपट २ के कहते थे ईसाई मत हो, घर को लौट चलो। हे पढ़नेहारे जो उस समय मेरे मन की दशा थी केवल ईश्वर ही जानता है॥

धर्म्म सनेह उभय मति घेरी। भइ गति सांप छूछूंदरि केरी॥

आप माता का प्रेम जानते हैं उस प्रेम के आगे और सब संसारी प्रेम हलका है। पर उस समय मुझे उस प्यारे प्रभु का वह अकथ प्रेम स्मरण आया कि वह मेरे पापों के लिये घायल किया गया उसने मेरी सख्ती क्रूस की मौत भी सह ली और अपने बचन में यह कह दिया है कि "जो माता अथवा पिता को मुझ से अधिक प्रेम करे सो मेरे योग्य नहीं है"॥

इस नाव में अकेला होके मैं अपने रिश्तेदारों के हाथ में पड़ गया, कोई मेरा सहायक न था। वे मुझ से मिलने को नहीं पर जबरजस्ती से लेने को आये थे। पर और भी सुनिये, कि हमारी नावकी चारों तरफ कई और नावोंने आके मुझे घेर लिया जिन में एक सौ दंडे बाज अपनी २ लाठियां लिये तयार थे, इन को देखकर मैं और भी डर गया। उसी समय मेरे एक चचेरे

भाई ने जो बड़ा क्रोधी था मेरा कपड़ा पकड़ लिया, औरतें सब रो रहीं थीं, मेरी मा मेरे रंज के मारे मूर्छित होकर गिड़ पड़ी थी। इतने में वह सो दंडेबाज मेरे भाई का हुक्म पाते ही हमारी नाव में पिल पड़े और चारों तरफ से मुझे ऐसा घेर लिया जैसा कोई खूनी को घेर लेता है। वे नाव कलकत्ते की तरफ ले चले। उस समय मेरी हालत जैसी थी आप समझते होंगे। परन्तु मैं एक बात जानता था याने प्रार्थना करना और आप निश्चय जानिये कि मैंने बिश्वास के द्वारा जय पाई क्योंकि लिखा है "संसार पर जय करने वाला कौन है केवल वह जो बिश्वास करता है कि यीशु ईश्वर का पुत्र है?"। इस समय मैंने अपने मन में यह प्रार्थना की कि हे धन्य यीशु अपनी आत्मा से मुझे थाम और मेरे कष्ट में मेरी सहाय कर। उस समय प्रभु ने मेरी सुनी और मुझे उनके हाथों से छुड़ाया॥

किसी न किसी तरह से यह बात कालेज के अफसरों के कान में पहुंच गई कि मेरे रिश्तेदार झूठ और मकर से मुझे धोखा देकर नाव में ले गये हैं और मेरी मरजी के विरुद्ध मुझे अपने घर खींचे ले जा रहे हैं। फौरन मेरे छुड़ाने के लिये आये। और कालेज के विद्यार्थियों, नोकरों इत्यादि को एक नाव में बैठाकर उस नाव को जाके रगेदा जो मुझे ले जा रही थी और झट नाव में घुस पड़े। भारी युद्ध हुआ। मैं इस को एक दरयाई युद्ध ही कहूंगा। दोनों ओर से खूब बहादूरी दिखाई गई और बहुतों ने अच्छी चोट खाई, लठैत तो पैरना जानते ही थे सो वे दरिया में कूद फांद कर किनारे हो गये, सिर्फ मेरे रिश्तेदार रह गये और यह भी हक्का बक्का थे क्योंकि जिन को वे मजूरी पर लाये थे वे तो छोड़ के

भाग गये । इस के विषय यदि आप चाहें तो योहन रचित सुसमाचार के १० वें पर्ब्ब को खोल के पढ़ लीजिये वहां एक बहुत उत्तम शिक्षा है । "मजूर भागता है क्योंकि वह मजूर है और भेड़ों की कुछ चिन्ता नहीं करता है" । अब तो मेरे रिश्तेदारों का क्रोध मुझ पर इतना होने लगा जिस की सीमा नहीं । उन्होंने सोचा कि मैं ही इस सब आफत का सबब हूं । उन्होंने मुझे मार डालने की धमकी दी और कहा कि अब भी चेत और राह पर आ । पर मैंने अपना कान बहिरा कर लिया और उनकी धमकियों की ओर जरा भी ध्यान न किया। अब तो ये बातें पुरानी हो गईं और गुजर गईं । पर कभी २ वे मुझे ताजी मालूम होती है, वह समय मेरे लिये मानो आग की भट्ठी थी। जब मेरे चचेरे भाई ने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता है तो मुझे मार २ के हरा नीला कर दिया और उठा के दरिया में पटक दिया । मैंने तो जाना था कि मैं बचूंगा ही नहीं पर वह पूनों का दिन था और दरिया में बड़े पल्लड़ उठ रहे थे सो उनके द्वारा मैं दूर बहाया गया, और मेरी पीठ में कुछ लगा और क्या देखता हूं कि वह एक नाव की पतवार है फौरन मैं उससे लिपट गया ॥

इतने में मेरे बचानेहारों ने आके मुझे अपनी नाव में ले लिया और कालेज में ले गये । वह मार जो मुझ पर पड़ी थी उसके सबब से कई दिन तक मैं भारी पीड़ा में रहा । पर अच्छा होते ही मैंने अपने मन में ठाना कि अब बपतिस्मा लेना अवश्य है कलकत्ते को लौट आया ॥

उन दिनों में थोड़े ही ईसाई होते थे । मेरे ईसाई होने की खबर कलकत्ते के बहुत लोग पा गये थे सो बपतिस्मा होने के दिन एक बड़ी भीड़ गिरजा घर के पास इकट्ठी हुई ।

मैं समझता हूं कि उन में से बहुतेरे केवल तमाशा देखने को आये थे। कई लोग अकसर यह कहा करते हैं कि आज कल कम ईसाई होते हैं पर यह तो उलटी बात है। खुदावन्द मसीह का राज इस देश में फैलता जाता है आप ही हर कहीं देखिये कि सुसमाचार की शिक्षा कैसी फैलती जाती है। कितने हिन्दू और मुशलमानों को आप देखेंगे कि उन्होंने अपने मन से अपना २ धर्म्म त्याग दिया है प्रभु ईसा के चेले तो होने चाहते हैं परन्तु उनके मन में संसार का बड़ा डर है। आप गुरु चरन बोस की तकलीफ़ों पर ध्यान कीजिये। सच्चाई को मानने में हमेशा दुःख सहना पड़ता है पर जो समझदार हैं वे सच्चाई के लिये अपनी जान भी देने को तयार हो जाते हैं और उस को पाते हैं। संसार तो बीतता जाता है। हम सब को एक दिन यहां से जाना होगा। हम ने तो मनसा बाचा और कर्मणा से पाप किये हैं। हमें कौन शुद्ध करेगा? कौन निष्पाप है? केवल एक जो हमारे बचाने और शुद्ध करने के लिये मनुष्य की समानता में आया। मैं आप से बिन्ती करता हूं कि अपने पर दया कीजिये, अपने देश पर दया कीजिये, अपने लोगों पर, बाल बच्चों पर और अपने मित्रों पर भी दया कीजिये। डरने से क्या होगा? प्रभु ईसा के पास पापों की क्षमा है। वह पवित्र दयालु सर्वज्ञानी और सर्वशक्तिमान है। हम कर्म्मों से मुक्ति नहीं पा सकते हैं। मुक्ति अर्थात् पापों से छुटकारा पाना और पवित्र जीवन काटना यह ईश्वर का दान है। जो हमें ईसा मसीह के द्वारा बिना दाम केवल अनुग्रह से मिलता है॥

अब मेरा बपतिस्मा हो चुका और मैं प्रभु ईसा मसीह का चेला हो गया पर मसीही होने के पीछे एक अनोखी बात देखने

में आई कि जिन रिश्तेदारों ने पहिले मुझे सताया सो मुझे बहुत प्यार करने लगे। मैंने आप से कहा था कि मेरी शादी ईसाई होने के पहिले हो चुकी थी पर मेरी पत्नी मेरे साथ न आई थी। इस में मुझे बड़ी कठिनाई पड़ी। उसके माता पिता उसकी अब बड़ी चौकसी करने लगे। उनकी यह इच्छा थी कि वह मेरे पास कभी न आवे इस रीति से नौ बरस तक वह अपने माता पिता के साथ रही परन्तु इन बरसों में मैं सदा ईश्वर से यह प्रार्थना करता रहता था कि किसी न किसी प्रकार से वह रास्ता खोले कि वह मेरे संग आके रहे। जो २ उपाय मैं उसके लाने का करता था किसी में कामयाबी न होती थी। परन्तु सन् १८५१ में उसके पिता याने मेरे ससुर का देहान्त हो गया और रोक मिट गई। ईश्वर ने मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया और मेरी पत्नी से फिर भेंट हुई और उसने भी मसीह प्रभु पर बिश्वास करके बपतिस्मा पाया॥

अंत में मैं यह कहता हूं कि ईश्वर ने मुझे बड़ी बड़ी आशीषें दीं हर तरह से मेरी सहायता की उसके नाम का मैं धन्य मानता हूं। जो उस पर भरोसा करते हैं वह हर तरह से उनकी खबर लेता है। उसके पवित्र नाम का धन्यबाद होय॥

मेरे मित्र तू दिल लगा • सुन कलाम तू प्रभु का।
कहता वह हे गुनहगार • क्या तू मुझे करता प्यार॥

——:o:-:o:——

राम चन्द्र बोस साहिब एम. ए.।

——:o:o:-:o:o:——

राम चन्द्र बोस साहिब जिस रीति से ईसाई हुये श्रौर जैसा जीवन उन्होंने बिताया उसका थोड़ा सा बर्णन इस जगह होता है उनका जन्म सन् १८३७ में हुआ था। लड़कपन ही से यूरोप की विद्यायों का सीखने की उन्हें बड़ी अभिलाषा थी। इस लिये वह अपने चचेरे भाई बाबू भूवन मोहन बोस को लेके डाकृर डफ साहिब के कालेज में भरती हुये। उस समय उस कालेज का बड़ा नाम था कारण यह था कि उस में जो शिक्षा देते थे सो बड़े विद्वान, धर्म्मी, प्रेमी श्रौर बड़े परिश्रमी थे। डाकृर डफ साहिब ने राम चन्द्र के चहरे को देखकर जान लिया था कि यह होनहार लड़का है श्रौर थोड़े ही समय में उन का बिचार ठीक मालूम हुआ क्योंकि उसके दिल पर पाठशाला की कोमल श्रौर पवित्र शिक्षा का असर होने लगा। उन दिनों में पादरी साहिबों की पाठशालाओं की श्रौर मास्टरों की श्रौर ही दशा थी। कहते हैं कि वे आज कल के मानिन्द न थे। वे सरकारी कानून श्रौर रुपये पैसे के बंधन में न फंसे थे इस लिये वे सुसमाचार श्रौर प्रभु ईसा मसीह की शिक्षा देने में अधिक समय खर्च करते थे इस लिये भारी बरकतें पाते थे। राम चन्द्र अपने गुरुओं की शिक्षा पर बहुत मन लगाते थे क्योंकि इन की बुद्धि बड़ी तेज थी। कुछ काल के पीछे उनके

मन में यह बात जम गई कि मुक्ति का मार्ग बिश्वास के द्वारा प्रभु ईसा मसीह की शरण में आने से हो सक्ता है जो पापियों का बचानेवाला और त्राणकर्त्ता है और उन्होंने इस बात को भी जान लिया कि मैं सबसे बड़ा पापी हूं पर ऐसा करना बहुत कठिन था क्योंकि उन दिनों में यह बहुत कठिन था कि कोई ऊंच जाति का हिन्दू आसानी से ईसाई हो जावे लेकिन तौभी वह अपना बिश्वास सभों के सामने जाहिर करने से न डरे और दोस्तों और दुश्मनों भी क्रूरता और बिरोध का सामना किया डरते तो बहुत थे परन्तु वह ईश्वर जिसने उनके दिल में अच्छा इरादा डाला था उनकी सहायता करने को तैयार था। वह यह अच्छी तरह जानते थे कि ईसाई होने से बड़ा दुःख सहना पड़ेगा तिस पर भी उस परमात्मा की आज्ञा को उल्लंघन न किया और उसने उनको सामर्थ और अनुग्रह दिया इस प्रकार से उसकी दया और कृपा से सभों के सामने उन्होंने उसको अपना गुरु और मुक्तिदाता मानके उसके नाम से बपतिस्मा लिया॥

विद्यार्थीपन की दशा में वह बड़े बिचारी बिश्वास योग्य और परिश्रमी थे कालेज में वह सब से याने सब विद्यार्थियों से तेज से। उनके साथी याने साथ पढ़नेहारे उनको अपना शिरोमणि समझते थे। और ऐसे तीव्र बुद्धि थे कि कालेज का उमदा से उमदा इनाम वही पाते थे। बुद्धि में भी उनके साथी उनकी बराबरी नहीं कर सक्ते थे यह दशा उनकी जवानी के दिनों की थी। ऐसे महनती और तेज विद्यार्थी

को अच्छी नौकरी पाना कुछ भी कठिन नहीं। इस लिये जब वे कालेज में पढ़ चुके तो बनारस में उन्होंने मुदर्रिस का काम पाया और अपने को ऐसा योग्य उस्ताद दिखाया कि उस समय के लोग सब उनकी प्रशंसा करते थे। हर एक विद्यार्थी उनका आदर करता था और आज्ञा मानता था। और उनके पढ़ाने की तो यह तारीफ थी कि जो कुछ उन्होंने सीखा था वह औरों को मानो पिला देते थे। आज कल ऐसे मुदर्रिस बहुत कम देखने में आते हैं॥

पर इस काम को उन्होंने बहुत दिनों तक न किया इसको छोड़कर वह अवध के सरिश्तेतालीम में एक सरकारी अफ़सर हो गये और थोड़े ही दिनों में अपनी योग्यता के कारण मशहूर होने लगे। सरिश्तेतालीम के बड़े बड़े अफ़सर उनकी बड़ी इज्जत करते थे और यह ख्याल करते थे कि यदि वह कुछ काल तक काम करते रहें तो ऐसे लायक हैं कि सरकार उनको उमदा से उमदा जगह देगी पर जनाब बोस साहिब को रुपया पैदा करने और नाम हासिल करने का जरा भी ख्याल न था। उनका मन तो और ही तरफ लगा था। वह कहते थे कि जिस प्रभु ने मुझे अपना लहू देके मोल लिया और पाप की गुलामी से छुड़ा लिया है मैं उसकी सेवा करूंगा यद्यपि वह उमदा तनखा पाते थे और उन्नति की भी आशा थी तौभी उस नौकरी को छोड़ दिया और सब रोक टोक तोड़कर अपने प्रभु की सेवा में मन लगाया। वह लखनऊ में

रह के सुसमाचार प्रचार करने लगे और इस बात को ठान लिया कि मैं अपने जीवन भर इसी काम में लगा रहूंगा। सब मसीही तन और मन से उनका आदर करते थे और उनको किसी बात की कमती न थी। उन्होंने बंगाल संयुक्त प्रदेश बम्बई और मद्रास में दोरे किये और जगह जगह लेकचर दिये। जहां कहीं वह जाते थे लोग उनके उपदेश और बिचारों से आनन्द होते थे और उनको बड़ी खुशी से कबूल करते थे। उन्होंने एक बार अमरीका महाद्वीप की भी यात्रा की और तरह तरह के लेकचर वहां दिये। शिकागो नगर के महाविद्यालय में हिन्दू फैल सफा या न दर्शनों पर कई व्याख्यान दिये और वहां के प्रोफेसर और विद्यार्थी ऐसे प्रसन्न हुये कि राम चन्द्र बोस साहिब को उन्होंने एम॰ ए॰ की उपाधि दी। और निःसन्देह वह इसी योग्य थे भी। वह देश सम्बन्धी सभा सम्बन्धी और धर्म्म सम्बन्धी सब बातों से प्रसन्न होते थे और अपने देश के लोगों की भलाई में तत्पर रहते थे। वह इंडियन नेशनल कांग्रेस के एक सच्चे और जीवते मेम्बर थे और जो जो व्याख्यान उन्होंने उसके बिषय में दिये हैं सो बहुत ही ठीक है॥

वह केवल मधुर और उत्तम उपदेश देनेहारे न थे परन्तु उत्तम और लाभदायक पुस्तकों के बनानेहारे भी थे और अंगरेजी भाषा में उन्होंने इस प्रकार की नाना प्रकार के बिषयों पर कई पुस्तकें लिखी हैं॥

कई बरसों से उनकी तबियत अच्छी न रहती थी तौभी इस दशा में वह प्रभु का सन्देश किसी न किसी तरह से लोगों को दिया करते थे। सन् १८९२ में तीन महीने तक बीमार रहे और अकसर अपने बिस्तर ही पर थे। तौभी ईश्वर का धन्यवाद हो कि इस भक्त की लौ अपने प्रभु ही में लगी रहती थी और उसके प्रेम का प्रकाश उनके हृदय में अधिक होता जाता था। इसी बीमारी की दशा में आसवर्न साहिब ने उनकी मुलाकात की। बहुत बात चीत के बाद बोस साहिब ने उनसे यह भी कहा कि प्यारे आसवर्न मैं इस बात पर दृढ़ बिश्वास कर रहा हूं कि प्रभु ईसा मुझे प्यार करता है पर इस प्यार का यह सबब नहीं कि मुझ में कोई उत्तमता है पर यह कि वह दयालु यीशु ही है॥

जब उन्हें डाक्टर साहिब देखने आये तो कहने लगे कि आप का आवाज तो बैठ गया है इसके सुधरने की कोई उम्मेद नहीं पर आशा है कि आप फिर चंगे हो जावेंगे। बोस साहिब ने कहा अगर मेरा आवाजही बैठ जावेगा तो मैं जीना नहीं चाहता हूं क्योंकि मैं चाहता हूं कि अगर जीऊं तो प्रभु ईसा के नाम का प्रचार करूं। इस दशा में वह बार २ प्रभु ईसा मसीह के सुन्दर और मनोहर भजनों को प्रतिदिन सुनते थे और इसी रीति से प्रभु पर भरोसा रखते हुये उनका देहान्त हुआ॥

—— :0:-:0: ——

प्रोफसर राम चन्द्र बोस साहिब का जीवन वृत्तान्त।

——:0:0:—:0:0:——

सन् १८२१ में राम चन्द्र बोस साहिब का जन्म पानीपत में हुआ था और उन्होंने दिल्ली की बड़ी पाठशाला में शिक्षा पाई थी जहां वे अपनी सुशीलता और विद्या में प्रवीणता के कारण बहुत प्रसिद्ध थे। तब सन् १८४४ में उसी पाठशाला में वे पदार्थ विज्ञान के प्रोफसर अर्थात् शिक्षक नियत किये गये उन छः बरसों के बीच जब कि वे इस पद पर थे केवल अपने काम को ही न चलाते थे किन्तु दो समाचार पत्रों का भी भली भांति प्रबन्ध करते थे और जिससे कि विलायत की नई नई विद्या और ज्ञान हमारे भारतबर्ष में प्रचलित हो जाय इस लिये उन्होंने गणित शास्त्र की कई उत्तम उत्तम पुस्तकें अंगरेजी भाषा से उलथा की। सन् १८५० में गणित के कठिन कठिन प्रश्नों को सुगम कर करके एक पुस्तक बनाई जिससे उन के नाम की प्रसिद्धता यूरप की बड़ी बड़ी पाठशालाओं में हो गई और उसके पारितोषक में सरकार से एक ख़िलत और २०००० रुपया पाया। पर अब लों वे किस धर्म्म का अवलम्बन करते थे ऐसा प्रश्न कदापि कोई करे तो उत्तर यह है कि वे हिन्दूधर्म्म के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते थे॥

जो अपने सारे हृदय से सत्य का खोज करते हैं अवश्य ही उसे प्राप्त कर लेते हैं। सत्य बहुमूल्य हीरे और लालों से हां जगत भर के उत्तम से उत्तम पदार्थों से श्रेष्ठ है जिस ने उसे

पाया उसने सब कुछ पाया और जिसने उसे न खोजा उसका जीवन वृथा ही गया। बोस साहिब भी सतमत की खोज में थे और इस को अपने जीवन का उत्तम भाग समझते थे वे कहते हैं कि "मैंने इस बात में यहां लों उन्नति की थी" जैसे कि वर्तमान समय के ज्ञानवान और विद्वानों की दशा हो रही है "मैं एक ईश्वर को मानता था। और हिन्दू मुसलमान और ख्रीष्टियान धर्म्मों को तुच्छ समझता था इसी अवसर में मैं एक दिन सांझ के समय टहलते २ एक गिरजा घर के समीप जा निकला और अपने मन में कहा कि चलके देखूं तो इस में किस प्रकार लोग आते हैं जो भीतर जाके दृष्टि की तो मुझे बड़ा ही अचरज हुआ क्योंकि वहां ज्ञानवान और बुद्धिमान बड़े २ साहिब बैठे ईश्वर की उपासना कर रहे थे और उसकी भक्ति और ध्यान में मगन थे उन में से मैं बहुतों को भली भांति जानता था। इससे पहिले मैं यह समझता था कि कोई विद्वान और बुद्धिमान विलायत का साहिब ख्रीष्टियान धर्म्म पर बिश्वास न करता होगा। पर अब तो मेरी आंखें खुल गईं और मैं सोचने और अपने मनही मन कहने लगा कि हे मन जिस धर्म्म को ऐसे २ चतुर ज्ञानी मानते हैं जैसे कि मैं इस गिरजा घर में देख रहा हूं। अवश्य यह धर्म्म बिचार और परीक्षा योग्य है। इस लिये मैंने ईसाई धर्म्म शास्त्र अर्थात् बैबल, गीता और कई धर्म्म सम्बन्धी पुस्तकें एकत्र करके उन का भली भांति पढ़ना और ईश्वर से प्रार्थना कर २ बिचारना और सत्य का खोजना आरम्भ कर दिया। इस बिचारने और खोजने का फल यह हुआ कि निश्चय ख्रीष्टियानधर्म्म सत्य और यथार्थ और ईश्वर की ओर से है। पर उन्हों के सामने बहुत सी रुकावटे थी जिनके सबब खुला खुली ख्रीष्टियान

हो जाना बहुत कठिन था। वे जानते थे कि ख्रीष्टियान हो जाने से माता, स्त्री, भाई, बन्धु और बच्चों को छोड़ना पड़ेगा और उनके सब जान पहिचान बिरोधी हो जावेंगे क्योंकि उन्होंने यह भली भांति सीख लिया था जो प्रभु यीशु ने सुसमाचार में कहा है "जो माता अथवा पिता को मुझ से अधिक प्रेम करता है सो मेरे योग्य नहीं और जो पुत्र अथवा पुत्री को मुझ से अधिक प्रेम करता है सो मेरे योग्य नहीं। और जो अपना क्रूस लेके मेरे पीछे नहीं आता है सो मेरे योग्य नहीं। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण गवांवे तो उसको क्या लाभ होगा अथवा मनुष्य अपने प्राण की सन्ती क्या देगा। जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोवे सो उसे बचावेगा। यदि कोई मेरी सेवा करे तो मेरे पीछे हो लेवे और जहां मैं रहूंगा तहां मेरा सेवक भी रहेगा"। ऐसी ऐसी बातों पर बिचार करने से वे सब रुकावटों पर जयवंत हुये और ११ वीं मार्च सन् १८५२ में बपतिस्मा के द्वारा सभों के सामने ख्रीष्टियान मण्डली में मिल गये। इस दशा में भी अपना कालेज अर्थात् पाठशाला का काम भली भांति करते थे परन्तु जब कभी अवसर पाते थे तो विद्वान और बुद्धिमान हिन्दू और मुसलमानों के पास जाकर उनको इस नये गुरु प्रभु यीशु ख्रीष्ट का समाचार सुनाते थे। उनकी यही इच्छा रहती थी कि किसी न किसी रीति से मेरे स्वदेशी भाई इस मुक्तिदाता के ज्ञान को प्राप्त करें जिस पर बिश्वास करने से मैंने अपने पापों की क्षमा और शांति प्राप्त की है। उनके इस प्रकार के परिश्रम से कई बड़े घराने के लोगों ने ख्रीष्ट को ग्रहण किया और २ भी बहुत लोग थे जो इस धर्म की खोज

करने लगे। इस में तनिक भी सन्देह नहीं कि जो गहिरे पानी में गोते मारते हैं सो अवश्य बड़े मोल के मोती पाते हैं। सत्य मार्ग को पाना सब से उत्तम है। क्योंकि हमारा जीवन क्या है? "हर एक प्राणी घास की नाईं और मनुष्य का सारा विभव घास के फूल की नाईं है। घास सूख जाती है और उस का फूल झड़ जाता है परन्तु प्रभु का बचन सदा लों ठहरता है और यही बचन है जो सुसमाचार में तुम्हें सुनाया गया है"॥

अब बोस साहिब के जीवन का हाल और आगे देखिये। सन् १८५७ के बलवे के समय उनकी जान बड़े जोखिम में थी परन्तु उनके भाइयों ने उनको अपने घर में छिपा लिया पर जब जान पड़ा कि उनका छिपना प्रगट हो जायगा तो किसी न किसी रीति से वे अंगरेजी छावनी में पहुंच गये जो उस समय दहली के सामने पड़ी थी। इस समय उनके बचने की आशा न थी परन्तु ईश्वर ने उनको पनाह की जगह में पहुंचा दिया। बलवा शान्त होने के पीछे सन् १८५८ में वे रुड़की शहर के सरकारी इंजीनरी पाठशाला में हिसाब पढ़ाने के लिये स्थापित हुये और उसी बरस के अन्त में दिल्ली के नये सरकारी स्कूल के हेड मास्टर ठहराये गये॥

सन् १८६३ में वे एक बड़े आदर योग्य पद पर नियत किये गये और वह यह था कि महाराजा पटियाला के शिक्षक का उत्तम काम उनको मिला। इस भारी काम को ईमानदारी के साथ पांच बरस तक चला के वे फिर दिल्ली को लैाट आये। यहां रहकर इन्होंने कई उत्तम पुस्तकें लिखकर छपवाईं परन्तु अठारह महीने के बाद जब महाराजा का राज तिलक होने को था तो महाराजा ने फिर उन्हें पटियाले में बुला लिया और गद्दी पर बैठने पर उन्हें ख़िलत और जागीर दी और

उनके अच्छे और बिश्वास योग्य कामों के कारण अपने सारे राज्य के मदरसों का अधिपति जिस को अंगरेजी भाषा में डाइरेक्टर कहते हैं स्थापित कर दिया। यह बोस साहिब ही थे जिन्हेंाने पटियाले के राज्य में विद्या की उत्तम और मज़बूत नेव डाली और इस के लिये प्रसिद्ध भी हुये। हर कोई इस बात को अच्छी तरह जानता है कि मसीही होकर और भारी अधिकार पाके सब को प्रसन्न करना और अपना काम अच्छी तरह से चलाना कैसी कठिन बात है तिस पर भी बोस साहिब ने परमेश्वर के अनुग्रह पर भरोसा करके और धीरज धरके अपने नेक चलन से जो २ राज सम्बन्धी अधिकार उन को सोंपे गये थे उन सब को उत्तम रीति से पूरा किया और लोगों से आदर मान पाया। इन की दशा अवश्य दानिएल भविष्यद्वक्ता के ऐसी होगी। दानिएल की कथा बहुत मनोहर है। उसके पढ़ने से आप जान जावेंगे कि किसी ईश्वर भक्त को अधिकार पाके उन लोगों में जो परमात्मा को नहीं जानते बिश्वास के साथ काम करना कैसा कठिन है। सन् १८७९ में फिर उन्होंने पटियाला छोड़ दिया और कारण इस का यह था कि बहुत काम काज करने से वे कुछ बीमार और निर्बल हो गये थे और अपने मरने लों वे निर्बल ही रहे। बीमारी के बिस्तर पर जब थे और निर्बलता ने भी घेर लिया था तब भी उनकी यह दशा थी कि बार बार धर्म्मशास्त्र पढ़वाते और प्रार्थनाओं में भागी होते थे। उनका पूरा बिश्वास प्रभु यीशु मसीह पर मरने तक रहा और इस प्रकार ११ अगस्त सन् १८८० में अपने मुक्तिदाता पर बिश्वास करते हुये उन्हेंाने अपना प्राण त्यागा। धर्म्मी मनुष्य के जीवन और मृत्यु दोनों से ईश्वर की महिमा प्रगट होती है॥

राम चन्द्र बोस साहिब ने अपने प्रभु यीशु मसीह की सेवा तीस बरस तक अपनी ज़बान, रुपये और कलम के द्वारा की। वे हर साल एक हज़ार रुपया तो केवल लाहोर के बिशप साहिब के पास चन्दे की तौर पर भेजा करते थे। और अपने बिश्वास और ईसाई चाल चलन के द्वारा अपने प्रभु की महिमा आस पास के लोगों में सदा फैलाते रहते थे। हिन्दू मुसलमान और ईसाई सब उनको बड़ा आदर और सन्मान देते थे। और कदापि ऐसा कोई भी मनुष्य न था जो उनके शुभ आचरण के कारण उनकी प्रशंसा न करता था। पर अब उनका काम इस संसार में समाप्त हुआ और इस लिये उनके प्रभु ने उनको सदा के आनन्द में बुला लिया। प्यारो बिश्राम मन की शांति, पापों की क्षमा और पापों पर जय। केवल एक ही के द्वारा हो सक्ती है। सारे संसार के प्रकाश के लिये ईश्वर ने एक सूरज बनाया है इसी रीति से जगत भर के लोगों के लिये एक ही सच्चा पवित्र और दयावन्त गुरु ठहराया है जो सर्व-सामर्थी और सर्वज्ञानी है। वही हमारे पापी और अंधेरे मनों को प्रकाश कर सक्ता है। अगनित मनुष्यों ने उस पर बिश्वास किया। और प्रतिदिन गरीब और अमीर बिश्वास करते जाते हैं। मौत की कुलाहड़ी सभों के शिर पर झूम रही है। जगत का उत्तम से उत्तम सौदा क्या है यह कि हम उस पर बिश्वास करें और उसके सेवक और वह हमारा त्राणकर्त्ता और प्रभु हो जावे। वह हर एक मनुष्य को बुलाता है। उसका एक बचन सुनिये "यीशु ने खड़ा हो पुकार के कहा यदि कोई प्यासा होवे तो मेरे पास आके पीवे। जो मुझ पर बिश्वास करे जैसा धर्म्मपुस्तक ने कहा तैसा उसके अन्तर से अमृत जल की नदियां बहेंगी" ॥

——:0:–:0:——

लाल बिहारी दे साहिब का जीवन।

—:0:0:—:0:0:—

लाल बिहारी दे साहिब का जन्म सन् १८२४ में वर्द्दवान ज़िला के तलपुर गांव में हुआ था अपने गांव की पाठशाला में देशी विद्या पढ़कर उन्होंने कलकत्ते में आकर एक मदरसे में अपना नाम लिखवाया। यह एक ऐसा मदरसा था जहां बैबल की भी शिक्षा दी जाती थी और पादरी साहिबान इसके प्रबन्ध कर्त्ता थे। भाई बन्ध इस बात से प्रसन्न न थे कि वह ऐसे मदरसे में पढ़ें क्योंकि उनको यह डर था कि लड़का ईसाई हो जावेगा। पर पिता की इच्छा अनुसार वे पढ़ने लगे। उस समय वह मदरसा बहुत ही प्रसिद्ध था और डाक्टर डफ साहिब जिनका नाम हिन्दुस्तान के सारे विद्यार्थी अच्छी तरह जानते हैं उसके प्रबन्धकर्त्ता थे। दे के पिता की यह इच्छा हुई कि लड़का अंगरेजी भाषा भी सीखे क्योंकि अब तक वह कुछ अंगरेज़ी नहीं जानते थे। कहते हैं कि यही दे साहिब अपनी पूरी अवस्था में अंगरेजी के ऐसे उत्तम जानने हारे और लिखनेहारे हो गये कि उनके समान उनके देश में उस समय कम लोग निकलते। मानो अंगरेज़ी के वे पक्के मुन्शी थे। उन्होंने अपने मदरसे का जीवन आप ही लिखा है इस लिये डाक्टर डफ साहिब की बातें उनके बिषय में सच ठहरती है। डाक्टर साहिब लिखते हैं कि लाल बिहारी डेके "उत्तम स्वभाव, प्रेमव्यवहार, परस्पर आदर, नम्रता से बोलने अपने सब पाठों को समझने और सीखने के कारण सब पाठशाला के शिक्षक उनको बहुत प्रेम करते थे" उन्हीं के कहने के अनु-

सार हमको मालूम है कि विद्या सीखने के समय उन्होंने बड़ी बड़ी कठिनाइयां सही हैं तौभी उन दिनों में किसी रीति से निराश न हुये न अपने साथियों की परीक्षाओं के बश में आये पर सब कुछ बहादुरी के साथ धीरज धर के सहते गये और आत्मिक और सांसारिक दोनों विद्याओं को अच्छी तरह से सीखा। वे सदा अपने दरजों में पहिले रहा करते थे। और जो कुछ उनको सत्य जान पड़ता था उसके मानने में पीछे न हटते थे। जब वे हिन्दू थे उसी दशा में उन्होंने पावल प्रेरित के मसीही होने के बिषय में सुसमाचार की सच्चाई के बारे में एक बिषय लिखकर उत्तम इनाम पाया। परन्तु इस बात में उनके स्वभाव की प्रशंसा करना चाहिये कि उनका बुद्धि ही के बातों पर भरोसा न था जैसे कि आज कल के बहुत पढ़े लिखे लोग करते हैं अर्थात् यह कि सत्य को जानकर उसके इकरार करने और मानने से डरते और लजाते हैं प्रभु यीशु की अति उत्तम शिक्षा है कि "उनसे मत डरो जो शरीर को मार डालते हैं पर आत्मा को मार डालने नहीं सक्ते हैं परन्तु उसी से डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सक्ता है"। उन्होंने ईसाईधर्म्म को अपनी बुद्धि की कसौटी पर ईश्वर की सहायता पाकर भली भांति कस २ के निश्चय कर लिया कि मन की शांति हृदय की शुद्धता और पापों की क्षमा प्रभु यीशु को छोड़ किसी दूसरे से नहीं हो सक्ती इस लिये तारीख़ २३ जुलाई सन् १८४३ में सभों के सामने प्रभु यीशु को अपना स्वामी और त्राणकर्त्ता मान के बपतिस्मा के द्वारा उसको ग्रहण किया। और वही हुआ जिससे उनके भाई बन्ध डरते थे और उनके पिता चाहते थे जैसा कि हमने पहिले कहा। यद्यपि लाल बिहारी दे

साहिब हिन्दूधर्म्म को त्याग के मसीही हो गये थे तौभी हर एक मनुष्य जो उन्हें जानता था अवश्य इस बात को स्वीकार करेगा कि जिस दिन से उन्होंने प्रभु को ग्रहण किया उसके आगे पचास बरस तक अपने देश हितैषी और सच्चे भक्त रहे। और निःसन्देह उन मनुष्यों को आदर और सनमान मिलता है जो सच्चाई को जानकर साहस के साथ उसका स्वीकार करते और अपने बिश्वास में पक्के रहते हैं॥

सन् १८४३ से लेकर सन् १८६७ तक उन्होंने नाना प्रकार की उत्तम २ पुस्तकें लिख लिखकर छपवाई। इन में से कई तो देश की भलाई के लिये थी और कई धर्म्म सम्बन्धी थी उन की भाषा अति उत्तम और गूढ़ बिचारों से भरी हुई है। पढ़ने से जान पड़ता है कि लेखक बड़ा बुद्धिमान और ज्ञानी था। इन्हीं बरसों में वे कई समाचार पत्र भी चलाते थे जो बहुत मनोहर बिषयों से भरे थे। इस स्थान में जगह नहीं कि हम प्रत्येक का थोड़ा थोड़ा भी बर्णन करें॥

सन् १८६७ से उन्होंने सरकारी शिक्षा बिभाग में प्रवेश किया ऐसे विद्वान के लिये यह काम बहुत योग्य था। यहां उनको अंगरेजी इतिहास और दर्शनों अर्थात् फिलसफा में शिक्षा देनी पड़ती थी और ऐसा काम २७ बरस लों बहरामपुर और हुगली की सरकारी बड़ी २ पाठशालों में करके सन् १८८९ में पेनशन ले ली सरकारी नौकरी करते समय भी उन्होंने देश की भलाई के लिये कई उत्तम पुस्तक अंगरेजी भाषा में लिखीं जो बहुत ही प्रसिद्ध हैं। आपने कभी यह कथा सुनी होगी कि प्राचीन काल में एक महाराजा था जिसका नाम करासीस था वह अपनी संपत्ति पर बहुत फूलता था और कभी कभी अपने बहुमूल्य रत्न लोगों को दिखाता था कि वे उसको

भाग्यवान कहें। उसके भवन में एक ज्ञानी और बुद्धिमान मनुष्य रहता था जिसका नाम सोलन था। एक दिन करासीस ने सोलन से पूछा कि आप की समझ में सबसे भाग्यवान मनुष्य कौन है। वह यह जानता था कि सोलन अवश्य कहेगा कि आप ही हैं। पर सोलन ने उत्तर दिया कि भाग्यवान एक यूनानी मनुष्य था जिस ने अपना जीवन कुशल से बिताया और अंत में अपने देश की भलाई के लिये प्राण दिया। यही दशा तो लाल बिहारी दे साहिब की थी कि ईसाई होने के पीछे पचास बरस तक वे अपने देश की भलाई की चिन्ता ही में लगे रहे। और देश की भलाई इसी बात में है कि पाप का नाश हो और सत्य धर्म्म का प्रचार। और प्रत्येक मसीही इस बात का यत्न तन मन धन से कर रहा है॥

——:0:-:0:——

मथुरा नाथ बोस बी. ए., बी. एल., का जीवन वृत्तान्त ।

——:0:0:-:0:0:——

मथुरा नाथ बोस साहिब का जन्म जासोर जिला के चन्द्-पुर नगर में सन् १८४३ ई० में हुआ था । वह अपना बयान इस तरह लिखते हैं :—

जब मैं जासोर में अपने घर में था और पाठशाला में पढ़ने को जाया करता था तो ऐसा हुआ कि एकदिन एक विलायती पादरी साहिब ने मुझे बड़ी मेहरबानी से एक सुसमाचार दिया पर मैंने गुस्से में आकर उसके सामने ही उसको फाड़ के फेंक दिया जिस्से पादरी साहिब को मालूम हो जावे कि उनके धर्म्म का मैं कुछ आदर नहीं करता हूं पर इस बात के पढ़नेहारों को मालूम हो कि जिस पुस्तक की मैंने ऐसी बेइज्जती की थी । उसीके द्वारा मैंने अनन्त जीवन पाया । जब मैं अपने घर से कलकत्ते को जाने पर था । मैं अपने गुरु को प्रणाम करने गया । चलते समय उन्होंने मुझ से कहा कि यदि तुम डाक्टर डफ साहिब की पाठशाला में पढ़ोगे तो अवश्य ईसाई हो जाओगे । यह तो मेरे विषय में उन्होंने एक प्रकार की भविष्यद्वाणी की इस लिये जब मैं कलकत्ते में आकर उस उत्तम पाठशाला में भरती हुआ जिस में बहुत उत्तम शिक्षा दी जाती थी तो मैं उस भविष्यद्वाणी को याद करके बैबल पढ़ने से थर थर कांपता था । और जो कुछ पढ़ाया जाता था अर्थात् बैबल के विषय उसको एक कान से सुनकर

दूसरे से उड़ा देता था। ईसाईधर्म्म और ईसाइयों से मैं घिन करता था पर इस का कारण न जानता था पीछे तो मुझे विदित हो गया कि यह केवल शारीरिक और संसारी स्वभाव था क्योंकि ऐसा स्वभाव ईश्वर और उसके बचन से सदैव घिन करता रहता है॥

इसी हालत में होके मैं एक इतवार को ब्रह्मो समाज की सभा में गया। बाबू केशव चन्द्र सेन उस दिन जवानों को कुछ उपदेश देने पर थे। उसने एक पुस्तक खोलकर पढ़ी जिसको सुनकर मेरा मुरझाया हुआ मन हरा और ताजा सा हो गया। मालूम हुआ कि पुस्तक के बचनों में जिन्दगी है। हर एक वाक्य से बड़ा आनन्द होता था और उसकी बातें मानो अनुग्रह से भरी थी कि मेरा मन खुशी के मारे नाचता था। मैंने एक मित्र से जो मेरे पास बैठा था पूछा भाई इस पुस्तक का कर्त्ता कौन है? उसने मुझ को उत्तर दिया "राम मोहन राय इसका बनानेहारा है" मैंने अचंभा करके अपने मन में कहा राम मोहन राय अवश्य बड़ा महात्मा और ज्ञानी है जिसने ऐसी अजीब पुस्तक लिखी है। सभा तो समाप्त हो गई पर मेरा मन उम्मेद से भर गया और मैंने कहा आज मैंने जरूर कुछ उत्तम पदार्थ पाया है जो मेरी दुःखित आत्मा को शांति और चैन देगा। मैंने उस दोस्त से पूछा प्यारे यह पुस्तक मुझे कहां मिलेगी? क्योंकि मैं यह चाहता था कि खरीद कर उसे आज ही पढ़ूं। पर जब मैंने उससे सुना कि पुस्तक अब नहीं छपती तब तो मेरा मन सोच सागर में डूब गया। उस मित्र के पास भी वैसी ही एक पुस्तक थी और मैंने उससे कहा कृपा करके कुछ देर के लिये मुझे पढ़ने को दे दीजिये परन्तु उसने कुछ उत्तर न दिया क्योंकि वह अपनी

पुस्तकें मंगनी नहीं देता था। किन्तु बार २ मिन्नत करने से उसने मुझे दी। इस बहु मोल खजाने को पाके मैं खुशी और आनन्द से भरा हुआ घर लौटा और उस पुस्तक को पढ़ने बैठ गया। मेरा मन ऐसा लगा था कि भोजन भी जल्दी २ कुछ लिया दिया सा ही किया जिससे जो समय बचे सो उस पुस्तक के पढ़ने में खर्च होवे। भोर से सांझ लों मैं पढ़ने में लगा ही रहा और जब अंधियारा भी होने लगा तो मैं बाहर निकल आया क्योंकि कमरे के बाहर कुछ उजाला था। उस समय मेरा एक दोस्त आ पहुंचा जिस के साथ मैं हवा खाने जाया करता था और कहा कि आज हवा खाने क्यों नहीं चलते अभी तक पढ़ही रहे हो। मैंने उससे कहा प्यारे दोस्त यह राम मोहन राय की पुस्तक है जिस को मैं पढ़ रहा हूं। यह बहु मोल खजाना है मेरा मन इसका प्यासा था। उसने किताब मेरे हाथ से ले ली और कहा इस में हर एक बात राम मोहन राय ने बैबल से निकाल के लिखी है। राम मोहन राय की इस में कोई बात नहीं अगर चाहो तो बैबल से मिला लो। मैंने इस बात को सुन कर बड़ा अचरज किया। उस किताब को पढ़े बहुत बरस गुजर गये हैं सो मैं ठीक २ याद नहीं रखता उस में क्या २ बिषय थे। परन्तु मुझे पूरा बिश्वास है कि उस में यह बातें भी थी। "और भी मैं तुम्हों से जो सुनते हो कहता हूं कि अपने शत्रुओं को प्यार करो जो तुम से बैर करें उनसे भलाई करो। जो तुम्हें श्राप देवें उनको आशीष दो। और जो तुम्हारा अपमान करें उनके लिये प्रार्थना करो। जो तुझे एक गाल पर मारे उसको ओर दूसरा भी फेर दे। और जैसा तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम से करें

तुम भी उनसे वैसाही करो"। यह बातें मत्ती रचित सुसमाचार के पांचवें पर्ब्ब से आठवें लो मिलती हैं और लूक रचित के छठवें पर्ब्ब में। पढ़ने और बहुत बिचार करने के योग्य हैं॥

उस दिन से मैं प्रतिदिन बैबल पढ़ने लगा और उस में मुझे मेरी भूखी आत्मा के आसूदा करने के लिये उत्तम से उत्तम भोजन मिलने लगा मेरा मुरझाया हुआ मन फिर हरा होने लगा और मेरी जिन्दगी मुझे आनन्द दायक मालूम होने लगी। सच्चे उंजियाले के होते ही वह कुइच्छा और पापरूपी अंधकार नाश होगया। मैं उस ईश्वर का जिस का बर्णन बैबल में मिलता है कोट २ धन्यबाद करता हूं कि मेरे मन की घबराहट और भ्रम उसके पवित्र बचन को पालन करने से सदा के लिये दूर किया गया और उसकी सच्ची आनन्द और मगनता ने आके डेरा किया अब भी जब कभी मेरे मन में घबराहट उत्पन्न होती है तो मुझे केवल उसी प्रभु के बचन से शांति और छुटकारा मिलता है। चखो और देखो कि प्रभु भला है उसकी संगति करने और उससे प्रार्थना करने से वह आनन्द प्राप्त होता है जिसे संसार नहीं दे सक्ता॥

मैं न केवल घर ही में बैबल पढ़ता था परन्तु पाठशाला में जब उस्ताद मुझको समझाते थे बहुत मन लगाता था और जिस बात को मैं न समझता था तो इतवार को पादरी साहिब के पास जाकर उन्हों से पूछ लेता था। मैं अकसर अपने जान पहिचानों से कहता था कि "क्या बैबल के समान कोई पुस्तक है"? मैंने बड़े २ बुद्धिमानों और शायरों की किताबें पढ़ीं पर बैबल के समान एक को भी न पाया। यदि कहीं कोई इसके समान पुस्तक हो तो बताओ। परन्तु वे मुझे बहुधा यह जवाब देते थे अजी तुमने बैबल ध्यान

देके नहीं पढ़ी नहीं तो ऐसी बातें न कहते पर मैं उन्हें यह उत्तर देता था कि निःसन्देह मैं उसके विषय बहुत थोड़ा जानता हूं तैाभी यह कह सक्ता हूं कि उस में ऐसी शांति दायक बातें हैं जो कदापि किसी दूसरी पुस्तक में न मिलेंगी मेरे मन में अब तक यह ठीक बिश्वास न था कि ईसा मसीह ईश्वर का पुत्र है। मैं इस बात को तो अच्छी तरह जानता था कि बैबल में बहुत सच्चाई है परन्तु मुझे यह बिश्वास अब तक नहीं हुआ था कि यीशु नासरी महान ईश्वर और स्वर्ग और पृथिवी का कर्त्ता है। पर जब मैंने योहन रचित सुसमाचार पढ़ना आरम्भ किया तो उसके शुरू में यह पढ़ा "आदि में बचन था और बचन ईश्वर के संग था। वह आदि में ईश्वर के संग था। सब कुछ उसके द्वारा सृजा गया और कुछ भी उस बिना नहीं सृजा गया"। ऐसी साफ बातों से मैं मुंह न मोड़ सका तैा भी मैं यह जानने चाहता था कि ईश्वर को क्या जरूरत पड़ी थी कि अपनी आसमानी महिमा छोड़ के इस पाप भरे संसार में आया। और ऐसा दुःख और अपमान सहके कुकर्म्मी के समान क्रूस पर घात किया गया। इस बात के समझने के लिये मैंने कई उत्तम २ पुस्तकें जो अंगरेजी भाषा में लिखी गईं हैं पढ़ीं। उनके पढ़ने से मैं काइल हो गया कि अवश्य प्रभु ईसा मसीह ईश्वर का पुत्र है और उस ने दुःख और मृत्यु पापियों को मुक्ति देने के लिये सही जिन में से मैं सब से बड़ा पापी हूं। अब मेरे मन में इतना बिश्वास हो गया कि मैं ईसा मसीह की उपासना और उस से प्रार्थना करने लगा। मैंने जाना कि मेरे पाप और अपराध उसके लोहू के द्वारा क्षमा किये गये। मैं मृत्यु के डर से बहुत भयमान हुआ करता था वह भी मिट गया। मैंने उस पर

पूरा भरोसा किया और शांति पाई और उसी के द्वारा संसार शरीर और शैतान पर प्रबल होने लगा। मैंने उसकी कृपा और अनुग्रह से अपने को अब दूसरी ही दशा में पाया। उसका धन्यवाद हो॥

एक समय की बात है जब मैं ईसाईधर्म्म की खोज कर रहा था तो एक जवान आदमी जो मेरे साथ पाठशाला में पढ़ता था मुझ से पूछने लगा क्या यह सच है कि तुम ईसाई-धर्म्म की खोज में हो? मैंने उसे उत्तर दिया हां बिलकुल ठीक है। तब उसने कहा यदि वह धर्म्म सच्चा और ठीक होगा तो क्या तुम उसे मान लोगे। मैंने उससे कहा इस में क्या सन्देह है अगर ठीक ठहरेगा तो अवश्य मान लूंगा। सत्य के लिये तो प्राण भी निछावर कर देना चाहिये। उसने मुझ से बहुत बात चीत करने के बाद कहा कि ऐसी अज्ञानता का काम न करना उत्तम यह है कि ब्रह्मो समाज में आ जाना यह अति उत्तम होगा। ईसाई होने से तो सब कुछ छोड़ना पड़ेगा। आज कल की भी यही दशा है कि जिस में संसार न छूटे और ईश्वर भी प्रसन्न हो जावे इस कारण बहुत से पढ़े लिखे ज्ञानी जवान आर्य्य समाजी हो जाते हैं पर इसका अन्त यह होता है कि उनको शांति नहीं उनका स्वभाव नहीं बदलता संस्कार नहीं होता कोई तबदीली के निशान भी दिखाई नहीं देते। वे अपने मुंह से ऐसे बचन निकालते हैं जिन से जान पड़ता है कि उस सर्वशक्तिमान पवित्र ईश्वर को वे जानते ही नहीं पर अहंकार से फूल गये हैं और इस रीति से अपने अनमोल प्राण को मृगतृष्णा को देखकर नाश करते हैं। ईश्वर का न्याय और उसकी दया केवल बैबल ही से जानी जाती है॥

अब जानना चाहिये कि ईसाईधर्म्म पर मेरा बिश्वास तो था ही परन्तु मैं हर एक बात में जो वह धर्म्म सिखलाता है आज्ञाकारी होना चाहता था परन्तु मैं ऐसा निर्बल था कि यह मेरे लिये बहुत कठिन मालूम होता था। क्योंकि अपने भाई बन्धों को छोड़ना और सब कुछ त्यागना बहुत कठिन बात है तौभी सत्य को जानकर उसका इकरार न करना बड़ा ही पाप है। ईसा मसीह को मानकर हिन्दुओं में रहना तो बहुत कठिन है क्योंकि हमारे भाई हिन्दुओं के दस्तूर याने रीति व्यवहार तो मूर्त्तिपूजा और २ पापों से भरे हुये हैं इस बात का तो कोई इनकार कर ही नहीं सक्ता है। सो यदि ईसाई होके वह उनके साथ भी रहने चाहे तो हमेशा का मानों एक युद्ध करना है॥

मैं दो बरस तक और ठहरा रहा और उसके नाम का इकरार खुला खुली संसार के सामने न किया तब मैंने यह जाना कि और ठहरना न मुमकिन है क्योंकि प्रभु ने मेरी प्रार्थना सुनी और मुझे इस जाल में से निकालना चाहता है। जब तक मैं हिन्दू कहलाता था यही प्रार्थना उस प्रभु से करता रहता था। "हे प्रभु मुझ पर दयाकर क्योंकि तू देखता है कि मैं अपने आप में कुछ बल नहीं रखता हूं अपनी सामर्थ से मुझे इस जाल से निकाल और मैं तेरी प्रार्थना करता हूं मुझे यह शक्ति दे कि मैं आदमियों के सामने प्रभु ईसा मसीह के नाम का इकरार करूं उसने मेरी प्रार्थना ग्रहण की कि उसकी कृपा से मैंने १८६५ में उसके पवित्र नाम से बपतिस्मा पाया। इसके बाद मैंने यह कोशिश की कि मैं अपने हिन्दू रिश्तेदारों के संग रहूं और वे भी बहुत प्रसन्न थे पर अड़ौस पड़ौस के लोगों ने इस बात पर बिरोध किया इस लिये मुझे मसीही भाइयों के बीच

में रहना पड़ा अकसर बहुत लोग यह कहने लगते हैं कि आप घर में याने अपने लोगों में रहकर ही ईसा मसीह को मानते तो क्या अच्छा नहीं होता। कहना तो ठीक और अगर ऐसा होय तो बड़ी ही खुशी की बात होगी। पर क्या यह मुमकिन है। कभी नहीं एक मियान में दो तलवारें नहीं हो सकीं॥

मसीही होने के बाद बोस साहिब ने अपने प्रभु का नाम प्रचार करने में तरह तरह के यत्न किये जिस से कि जो कुछ उन्होंने पाया था वह औरों पर प्रकाश करें। उन्होंने सुसमाचार प्रचार करते हुये अपना सारा जीवन बिताया और बहुत लोग उनके वचन के द्वारा प्रभु पर बिश्वास लाये। हम उनका और बर्णन कर सक्ते हैं परन्तु पाठकों के लिये इतना बहुत है। सत्य के ग्रहण करने में बहुत सी रोक टोक और दुःख होता है परन्तु सत्य ग्रहण करने से अनन्त जीवन है और जो कोई अपने सारे मन से उसकी खोज करता है उसे अवश्य पाता है॥

—— :0: :0: ——

डाक्टर कृष्ण मोहन बनरजी।

——:0:0:–:0:0:——

हम संक्षेप में इस सज्जन और प्रसिद्ध जन का बर्णन करते हैं जो कलकत्ता नगर के उत्तर भाग का निवासी था। हिन्दुस्तान में ऐसे बहुत थोड़े लोग निकलेंगे जिन्होंने उनका नाम न सुना हो। उनके पिता का जीवन कृष्ण बनरजी और माता का श्री मती नाम था। जब वह पांच बरस के थे तो हिन्दू रीति के अनुसार उनके माता पिता ने उन्हें हेअर साहिब के पाठशाला में जो सिमला में थी पढ़ने को बैठाया। ग्यारह बरस की अवस्था में उनका जनेऊ हुआ और सन् १८२४ में वह हिन्दू कालेज में अंगरेजी और संस्कृत सीखने लगे। परन्तु यह शोक हुई कि इस के चार बरस पीछे याने १८२८ में उनके पिता का देहान्त हो गया। ईश्वर अनाथों का पिता है और जब कि वह चिड़ियों को भोजन देता है तो क्या मनुष्य को उत्तम पदार्थों से तृप्त न करेगा। कुछ महीनों बाद उनको सोलह रुपया महीना बिद्या सम्बन्धी कमेटी से स्कालरशिप मिलने लगा। इसके एक बरस पीछे उन को दहली में मास्टर का काम मिला पर किसी न किसी कारण से वह वहां न गये और सन् १८२९ में कालेज का पढ़ना छोड़ के कलकत्ते ही में एक पाठशाला में मास्टर हो गये। अब लों वह किसी धर्म्म का पालन न करते थे हां ऊपर से तो उनका वही धर्म्म था जो कि उनके माता पिता का भी था परन्तु अपने अन्तःकरण से वह किसी मत पर बिश्वास न करते थे। निःसन्देह लोगों के सामने वह अपने को बहुत भला और धर्म्मी दिखाते थे

क्योंकि यदि ऐसा न करते तो उनका आदर मान होना कठिन था । वह इस बात का ब्यान आप ही करते हैं और शोक और शरम के साथ कहते हैं कि यदि मुझे मनुष्य का डर न होता तो मैं अपना जीवन घिनौने और बुरे कामों में काटता और कभी मुक्ति और शांति का भागी न होता। परन्तु उस दयावन्त ईश्वर ने आप आके मेरा हाथ पकड़ा कि मैं मनुष्यों से न डरूं और न शरमाऊं पर केवल उसीसे डरूं और उसको प्यार करूं और मैं उसका धन्यवाद करता हूं कि उसीके अनुग्रह से जिसने मुझे अपने पुत्र के ज्ञान में बुलाया कि अंधकार के कामों से बचकर ज्योति का सन्तान हो जाऊं ॥

पर इसी समय उनको एक सज्जन पुरुष मिल गये जिनकी संगत बनरजी साहिब करने लगे। उन साहिब का नाम डिरोजियों था । बिचार उनके बड़े गहिरे थे और सदा गूढ़ बातों के बिचार में डूबे रहते थे। और यह तो सबही जानते हैं कि जो जिस का मत होता है उसका प्रभाव वह औरों पर भी डालने की इच्छा रखता है। यह भी स्मरण रखना चाहिये कि गूढ़ और कठिन बातों का बिचार करना उन्हीं पुरुषों को योग्य है जो बड़े ज्ञानी और सूक्ष्म बिचारी हैं। बनरजी साहिब को उनकी संगत से यह फल हुआ कि वह हिन्दूधर्म्म को सर्ब्बथा झूंठ समझने लगे और उन्होंने एक नया मत खड़ा किया कि हिन्दूधर्म्म का सुधार होवे। नतीजा यह हुआ कि धीरे २ वह एक प्रकार के नास्तिक से हो गये और न केवल यह दशा उन्हीं की थी पर और विद्यार्थियों की भी हो गई जो डिरोजियों की संगत में थे। इन सभों की दशा यहां लों हुई कि वह खुला खुली कहने लगे कि न तो कोई ईश्वर है और न आत्मा अमर है उन्होंने एक समाचार पत्र भी आरंभ

किया जिस में वह हिन्दूधर्म्म की व्यर्थता और अज्ञानता का बखान रहता था और सार उसका यह था कि हिन्दूधर्म्म को हानि पहुंचे इन सब बातें के सबब उनके जान पहिचान और कुटुम्बियों के मन में बड़ा दुःख हुआ और उनको घर से निकाल दिया। यदि इतना ही होता तो कुछ चिन्ता न थी पर जितने हिन्दू इन को जानते थे एक प्रकार से उन्होंने भी इन को अपनी संगत से अलग किया। कहां तक कहा जाय धीरे २ उनके बिरोध की चर्चा चारों ओर फैल गई। बंगालियों के मन उनकी ओर से बहुत कड़ुवे हो गये जहां कहीं चार आदमी इकट्ठे होते थे उन्हीं का जिकर सुनने में आता था। कई महीनों तक बंगाली समाचार पत्रों में उनकी निन्दा होती रही। कालेज में लड़के कम आने लगे और बहुत से हिन्दूमत के बिरोधियों की यह दशा हुई कि वह एका करके जिद्द के मारे हिन्दूमत को मानने लगे क्योंकि कभी २ आदमी की यही हालत होती है कि वह जिद्द से सच को झूठ और झूठ को सच कहने लगता है॥

ईश्वर के भेद बड़े गहिरे और आदमी की समझ से बाहर हैं जो बातें लोगों के सामने असाध्य हैं वह उसके सामने सहज हैं जब यह बड़ी गड़बड़ मच रही थी उसी समय बनरजी साहिब को ऐसा अवसर मिला कि उन्होंने तीन चार ईसाई उपदेशकों अथवा पादरी साहिबों से कई लेकचर सुने निज करके डाक्टर डफ साहिब के बाद बिवाद उनके मन में चुभ गये जिससे वह मसीहीधर्म्म की खोज फिर से करने लगे और अन्त इसका बहुत ही उत्तम हुआ॥

अब तो उन्होंने बड़ी सावधानी से चित्त लगाके मसीही-धर्म्म और और धर्म्मों के प्रमाणों को पढ़ा और यद्यपि उनके

मन से बहुत सी कठिनाइयां दूर होने लगी थीं तौभी इस बात के समझने में कि पाप क्या है और पापी के। पाप से निस्तार और मुक्ति देने के लिये कैसा शुद्ध और पवित्र त्राणकर्त्ता अवश्य है कुछ समय लगा परन्तु वह सर्वशक्तिमान और दयालु ईश्वर जिसने उनके मन में यह उत्तम बिचार डाला था उसने उसके। पूरा किया। पहिला उत्तम बिचार जे। उन के हृदय में उत्पन्न हुआ से। यह था कि ईश्वर का ज्ञान और धर्म्म अपार और असीम है जे। आश्चर्य्य कर्म्मों भविष्यद्वाणियों और सच्चाई से ईश्वर ने सारे जगत की मुक्ति के लिये ठहराया है इस लिये यह न चाहिये कि क्षुद्र बुद्धि और अल्प ज्ञान मनुष्य उसके बिषय बाद बिबाद करे परन्तु छोटे बालक के समान नम्रता से उसे ग्रहण कर ले॥

ईश्वर के ज्ञान की कटारी की अनी जब किसी जन के हृदय में चुभ जाती है ते। उसका फल अजीब तरह का होता है। सुसमाचार में उसके ज्ञान और बचन की प्रसंशा इस रीति से की है "ईश्वर का बचन जीवता और प्रबल और हर एक दे। धारे खड्ग से भी चोखा है और वार पार छेदनेहारा है यहां लें। कि जीव और आत्मा के। और गांठ गांठ और गूदे २ के। अलग करे और हृदय की चिन्ताओं और भावनाओं का बिचार करनेहारा है॥

ऊपर बर्णन हुआ कि कृष्ण मोहन बनरजी साहिब एक समाचार पत्र भी प्रकाश करते थे जिसका नाम खोजनेहारा था। अब इसी समाचार द्वारा उन्होंने इस बात का प्रकाश करा दिया कि मेरी इच्छा यह है कि मैं ईसाईमत के। ग्रहण करूं। इस खबर के सुनने से उन लोगें। के दिलें। में जे। पहिले ही से उनके। मरा समझ चुके थे कुछ दुःख ते। हुआ

पर बहुत नहीं और जो विद्वान थे और उनके गुणों को जानते थे उनको तो बड़ा ही शोक हुआ क्योंकि उन्होंने समझा कि वह एक दलदल से निकल कर दूसरी में फंसे। परन्तु उनके मित्रों और जान पहिचानों में से कोई २ ऐसे भी थे जो उन्हें भली भांति जानते थे जिन्होंने ईश्वर की कृपा से प्रभु ईसा मसीह को अपना गुरु माना और उसके शिष्य हुये॥

जब बनरजी साहिब सब बातों पर भली भांति बिचार कर चुके थे अर्थात् कि मसीही होने से संसार के लोग मुझे त्याग देवेंगे और मुझे बुरा भला कहेंगे तो उन्होंने डाकृर डफ साहिब से प्रभु ईसा मसीह के नाम से बपतिस्मा पाया और उसके सेवक हो गये। उनका नाम तो कृष्ण मोहन ही रहा। लोग समझते हैं कि ईसाई होने से नाम बदलना पड़ता है और बहुतेरे यह भी कहते हैं कि कपड़े और खाना भी बद-लना पड़ता है परन्तु यह तो भूल है। जो तुम्हारा मन चाहे वह नाम रखो और जिस प्रकार का भोजन और कपड़ा पहिनना चाहो पहिनो। नाम और खाने पहिरने से कोई जन कभी ईसाई नहीं हो सक्ता। एक बात तो बहुत ही अवश्य है सो वह यह है कि अपना मन बदलो और प्रभु ईसा मसीह की आज्ञा अनुसार अपना जीवन बिताओ पशुत्व को त्याग कर मनुष्यत्व में प्रवेश करो और ईश्वर जो तुम्हारा और सभों का पिता है उसको अपने सारे हृदय से प्यार करो और उसकी आज्ञा मानो और सब लोगों को ऐसा प्यार करो जैसा कि अपने को प्यार करते हो। यही तो ईसाई होकर कृष्ण मोहन ने भी किया। बहुत से जवानों को जब दुःख और क्लेश होता था और वे मसीही होने के लिये सताये जाते थे उस समय बनरजी साहिब उनकी हर तरह से

सहायता करते और उनको रहने के लिये अपने घर में जगह देते थे। शायद पढ़नेहारों में से कोई॰ उनको जानता होगा कि वह अपना आराम नहीं पर दूसरों का सदा ढूंढ़ते रहते थे। वह तो बहुत मशहूर और आदर योग्य पुरुष थे और अपने हिन्दूभाइयों को बड़ी २ सभाओं में जाकर उनको चिताते और समझाते थे और जो बुरे विचार लोग ईसाईमत के विषय करते थे अपनी शक्ति भर उनके मनों से उनसे निकालने का यत्न करते थे कि वे भी प्रभु को मान लेवें। इस प्रकार से उनके बहुत मित्रों ने बपतिस्मा पाके प्रभु को अपना त्राणकर्त्ता मान लिया और बड़े २ पद और आदर प्राप्त कर के अपनी शुद्ध चाल और पवित्र जीवन के द्वारा सभों पर प्रगट कर दिया कि ईसाई हो जाने से मनुष्य का जीवन बिलकुल नया हो जाता है और उससे ईश्वर की महिमा प्रगट होती है। यह नहीं जान पड़ता कि हमारे देश के लोग ईसा मसीह के नाम से क्यों भागते हैं। एक बात तो है कि शैतान अथवा पाप आत्मा जो उनके हृदयों में घुसा है। वह नहीं चाहता कि वे इस सच्ची ज्योति में आवें। क्योंकि यदि वह ज्योति के सन्तान हो जावेंगे तो शैतान का राज्य तो गया समझो। मनुष्य को सुधारने के लिये बाल बच्चों और घराने के लोगों को नेक और पवित्र बनाने के लिये मुहल्लों और गावों में मेल मिलाप और प्रेम बढ़ाने के लिये हिन्दूस्तान में धर्म्मराज्य फैलाने के लिये और उसको उत्तम दशा में लाने के लिये केवल एकही उपाय है अर्थात् कि लोग प्रभु ईसा मसीह को अपना त्राणकर्त्ता जाने। कृष्ण मोहन बनरजी को ऐसी ऊंच पदवी किसने दी। वह ऐसे सज्जन और नामी मनुष्य क्योंकर हो गये कि जिनका नाम सारे संसार में

फैल गया। उन्होंने बड़ी उत्तम उत्तम पुस्तकें लिखीं संस्कृत भाषा के वह पूरे पण्डित थे। उनकी लिखी पुस्तकें पढ़ने योग्य हैं सन् १८७६ में उन्होंने कलकत्ता यूनिवरसिटी अर्थात् महान विद्यालय से डाकृर आफ़ ला की पदवी पाई। कहां तक उनकी पदवियों का बखान किया जावे। वह हर एक सभा के मेम्बर थे चाहे राज्य सम्बन्धी चाहे विद्या और धर्म्म सम्बन्धी कैसी हो अपना जीवन उन्होंने ईश्वर और अपने देश के लोगों की सेवा में बिताया और ७२ बरस की उमर में परलोक बासी हुये॥

डाकृर के॰ एम॰ बनरजी साहिब के जीवन चरित्र से हमारे देश के लोग एक बहुत उत्तम और बहुमोल पाठ सीख सक्ते हैं। ईश्वर ने उन्हें बड़ी विद्या और ज्ञान दिया था। संस्कृत यूनानी लाटीनी और इब्रानी भाषाओं को वह भली भांति जानते थे और इनके सिवाय कई और भाषाओं का भी उन को ज्ञान था। परन्तु सब से बड़ी बात यह थी कि उन्होंने अपना सारा ज्ञान सारी योग्यता और अपना पूरा मन अपने मुक्तिदाता प्रभु ईसा मसीह के चरणों पर अर्पण कर दिया था। जो लोग उनके पास उठते बैठते थे वे कहते हैं कि वह मन के बड़े साहसी स्वतंत्र और परिश्रमी थे। उनके काम करने का ढब शुद्ध बिचार और बहादुरी का असर उनके साथियों पर आसानी से पड़ जाता था। वह अंगरेज और हिन्दुस्तानी दोनों को एकसा प्यार करते थे। यद्यपि उनकी संगति बड़े २ ज्ञानी और विद्यावान विलायतियों से थी तौभी वह अपने देश के उन लोगों को जो विद्या में उन्नति करते थे बड़ा आदर और सन्मान देते थे। सब जानते हैं कि पश्चिमी विद्या और ज्ञान की वह बहुत प्रशंसा करते थे तथापि अपने

देश की और अपने पुरुषाओं की उत्तम बातों में भी बहुत ध्यान देते और उनका सत्कार करते थे निदान उनका यह सिद्धान्त था। कि जो २ बातें सत्य हैं जो २ आदर योग्य हैं जो जो यथार्थ हैं जो जो शुद्ध हैं जो २ सुहावनी हैं जो जो सुख्यात हैं कोई गुण जो होय और कोई यश जो होय उन्हीं बातों की चिन्ता करो॥

हम बार २ लोगों के मुंह से यह सुनते हैं कि जो अज्ञान हैं और जिनको खाने को नहीं मिलता वही लोग ईसाई हो जाते हैं पर उनका कहना ठीक नहीं यदि वे अपनी आखें खोल के और बिचार करके देखेंगे तो उनका यह ख्याल दूर हो जावेगा हां हम यह तो मान लेते हैं कि ईसा मसीह प्रभु कंगाल और धनी, नीच और ऊंच, बूढ़े और जवान अंधे और लंगड़े सभों को पाप से छुटकारा देने आया है। ईसाईमत की शिक्षा यह है कि लोग आलसी और सुस्त न रहें अपने हाथों से काम करके खावें। और आप जहां कहीं ईसा मसीह के दासों को देखोगे ऐसा ही पाओगे। हां कदापि कोई सैकड़ों में एकाध मिलेगा जो बिगड़ा हुआ और आलसी होय पर उसकी गिन्ती ईसा मसीह के भक्तों में नहीं है। वह तो केवल नाम का मसीही है॥

—— :0:-:0: ——

पण्डित नील कण्ठ शास्त्री का जीवन चरित्र।

——:0:0:—:0:0:——

ऐसा कौन विद्यार्थी और सज्जन पुरुष है जिसने नील कण्ठ शास्त्री का नाम न सुना होगा। साधारण लोग भी उनके नाम की चर्चा बहुधा किया करते हैं। वह दक्षिणी ब्राह्मण थे और परन्तु उनके पुरखे पूना के रहनेवाले थे। लड़कपन से वह बनारस ही में रहे और संस्कृत विद्या को भली भांति सीखी। ऐसे मशहूर और विद्यवान की बहुत प्रशंसा करना योग्य नहीं पर इतना कहना तो उचित है कि वहां के उत्तम उत्तम पंडितों से उन्होंने वेद और छओं शास्त्रों का अच्छा अभ्यास किया था। जिन लोगों ने उन्हें देखा है वे इस बात को अच्छी तरह जानते हैं। बम्बई से कलकत्ते तक वह अकसर दौरा किया करते और धर्म्म सम्बन्धी व्याख्यान जगह जगह दिया करते थे। जो पुस्तकें उन्होंने अंगरेजी और देशी जबान में लिखीं हैं उनसे प्रगट होता है कि बड़े ज्ञानी और गूढ़ बातों की जाननेहारे और समझानेहारे थे। विद्या का उन को तनिक भी घमण्ड न था। उनका स्वभाव बालक के समान था और उनका जीवन एक सज्जन संत की नाईं था। सच है कि ईश्वर का डर ज्ञान का आरम्भ है। और उनका जीवन क्या ही मनोरंजन है जो परमेश्वर को जानते और उसकी आज्ञानुसार इस संसार में चलते हैं। परन्तु ऐसे मनुष्य थोड़े होते हैं। ईश्वर की यह इच्छा है कि हर एक मनुष्य उसको

जाने और उसकी सेवा और टहल आत्मा और सच्चाई से करे। हम उस दिन की बाट जोहते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं जिस दिन की हमारे हिन्दुस्तान के लोग सुमति शांति और प्रेम से उसकी सेवा में लवलीन होके उसके सामने झुकेंगे। परमेश्वर के सामने कुछ भी कठिन और असाध्य नहीं है इस लिये हम इस आशा से मगन रहते हैं॥

शास्त्री जी का जन्म सन् १८२५ में हुआ था। उन्होंने अपने विषय में लिखा है कि लड़काई में मैंने अंगरेजी नहीं पढ़ी थी और न पढ़ने की इच्छा थी क्योंकि मैं समझता था वह यमनों की भाषा है। मेरा बिश्वास हिन्दूधर्म्म पर बहुत ही पक्का था और मसीहीधर्म्म को तो मैं ऐसा समझता था कि वह राक्षसों और म्लेच्छों का धर्म्म है और केवल नादान लोगों के लिये है पर हमारे हिन्दूधर्म्म के दर्शनों याने फिलसफा का ज्ञान बहुत गूढ़ और अथाह है और उनके सिद्धान्त ऐसे पक्के हैं कि कोई शास्त्र और धर्म्म उनकी बराबरी करही नहीं सक्ता। ऐसी ऐसी बातों को सोच कर मैं अपने शास्त्रों पर बहुत फूलता था और उसी समय मैंने यह देखा कि ईसाई प्रचारक अपने धर्म्म का उपदेश काशी नगर में प्रतिदिन बड़े उत्साह से करते हैं तो मैंने अपने मन में यह ठाना कि उनके धर्म्म का खण्डन मैं अवश्य करूंगा इस काम के लिये मैंने कई बाद् बिवाद् याने मुबाहिसे की किताबें पढ़ीं और कई बार पादरी साहिबों और उपदेशकों से बहस भी किया। मेरे मन में ईसाई-मत खण्डन की आग यहां लों भड़की कि उसके खण्डन करने के बारे में मैंने एक पुस्तक भी लिखी और कई बरस तक मेरी ऐसी ही हालत रही पर अफसोस की बात है कि इन बातों से मेरे मन में कुछ चैन और शांति न हुई। परन्तु अब तक

मैंने ईसाईधर्म्म की मूल पुस्तक याने बैबल न पढ़ी थी सो मेरे मन में यह बिचार आया कि जब तक इन लोगों की यह पुस्तक न पढूंगा तब तक इन को हराना कठिन है इस लिये मैंने एक बैबल खरीदी और बड़े ध्यान के साथ उसको पढ़ने लगा। पढ़ते पढ़ते मैं ईसा मसीह के पहाड़ी उपदेश तक पढ़ गया और वहां क्या देखता हूं कि ये बातें लिखीं हुई हैं जिनको मैं पढ़नेहारों के लिये मत्ती रचित सुसमाचार के पांचवें पर्ब्ब से उतार देता हूं:— धन्य वे जो मन में दीन हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे शांति पावेंगे। धन्य वे जो नम्र हैं क्योंकि वे पृथिवी के अधिकारी होंगे। धन्य वे जो धर्म्म के भूखे और प्यासे हैं क्योंकि वे तृप्त किये जावेंगे। धन्य वे जो दयावन्त हैं क्योंकि उन पर दया की जायगी। धन्य वे जिनके मन शुद्ध हैं क्योंकि वे ईश्वर को देखेंगे। धन्य वे जो मेल करवैये हैं क्योंकि वे ईश्वर के संतान कहावेंगे। धन्य वे जो धर्म्म के कारण सताये जाते हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य तुम हो जब मनुष्य मेरे लिये तुम्हारी निन्दा करें और तुम्हें सतावें और झूठ बोलते हुए तुम्हारे बिरुद्ध सब प्रकार की बुरी बात कहें। आनंदित और आल्हादित होओ क्योंकि तुम स्वर्ग में बहुत फल पाओगे। ऐसे २ बचनों के पढ़ने से मेरा मन मोम हो गया और मैंने कहा निःसन्देह इस पुस्तक का कर्त्ता ईश्वर की ओर से था नहीं तो ऐसी उत्तम शिक्षा कभी न दे सक्ता। यह तो साधारण मनुष्य की शिक्षा नहीं हो सक्ती चाहे वह कैसा ही ज्ञानी और चतुर क्यों न होवे। बुद्धिमान जौहरी अच्छे मोती के खरीदने में कभी न चूकेगा पर अपना सब कुछ बेचके उसे लेवेगा। जो धर्म्म के भूखे और प्यासे होते हैं उनकी ऐसी ही दशा हुआ करती है॥

क्या कोई ईश्वर का विरोध कर सक्ता है? उसके आत्मा ने पण्डित नील कण्ठ जी के हृदय को पकड़ लिया उस से भागना कठिन था परन्तु केवल उनकी भलाई और पाप से छुटकारा देने के लिये। पर वह इस नई शिक्षा के विषय और भी जानना चाहते थे सो उन्होंने यह मन में ठाना कि किसी पादरी साहिब से सत संग करना चाहिये। उस समय परम भक्त पादरी विलियम स्मिथ साहिब बनारस में रहते थे जिन के साथ शास्त्री जी का बहुत सत संग हुआ। जिसका पूरा वर्णन द्विज नामक पुस्तक में जो उस समय प्रकाश हुई थी मिलता है। अब विचार यह हुआ कि मैं ईसा मसीह प्रभु का दास बन जाऊं इस बात को उन्होंने अपने पिता, चाचा और कई मित्रों पर जाहिर की और न केवल उन्हीं पर किन्तु काशी के बड़े २ शास्त्री और पण्डितों को भी समाचार भेज दिया कि मैं मसीहीधर्म्म को ग्रहण करना चाहता हूं और आप लोगों को अवसर देता हूं कि यदि हिन्दूधर्म्म सत्य और ईश्वर की ओर से है तो उसे अपने तर्क प्रमाणों के द्वारा सिद्ध करो और मुझे प्रभु ईसा मसीह के दास होने से रोको॥

हे पढ़नेहारो आप लोग अच्छी तरह से जानते हैं कि काशी नगर हिन्दुस्तान में विद्या और ज्ञान का भण्डार है और बड़े २ शास्त्री और विद्यावान और बुद्धिमान पण्डित वहां रहते हैं पर भारी वाद बिवाद होने पर वे सब इस बात को साबित न कर सके कि उनका धर्म्म यथार्थ और ईश्वर की ओर से है। जो कोई चाहे अब भी पक्ष पात छोड़ के देख ले कि यह बात बिलकुल ठीक है। मुक्ति का मार्ग कहीं उस में देख ही नहीं पड़ता। यह भी नहीं जान पड़ता कि मनुष्य और ईश्वर में कौन सा सम्बन्ध है। जो कोई सत्य का खोजी

होगा हमारी एक दो बातों को पढ़कर अवश्य इस बात को तलास करेगा कि पाप से छुटकारा कैसे होयगा और मनुष्य अनन्त जीवन कैसे पावेगा। ईसाईधर्म्मउपदेशक इसी बात का समाचार देते फिरते हैं पर लोगों की ऐसी दशा हो रही है कि वे इस बात के विषय अचेत से जान पड़ते हैं। धन बटोरने विद्या प्राप्त करने और बड़े २ लक़ब पाने की चिन्ता उनको रात दिन रहती है परन्तु मुक्ति के विषय वे अचेत पड़े हैं॥

शास्त्री जी अपने पिता को इतना प्रेम करते थे कि कुछ काल तक उस प्रेम के कारण वह ईसाई होने से रुके रहे और यही हालत हमारे देश में आज के दिन हजारों पढ़े लिखे समझदार जवानों और हर दशा के लोगों की हो रही है। वे अच्छी तरह से जानते हैं कि केवल मसीहीधर्म्म के ग्रहण करने से पापों से छुटकारा और नया जन्म मिलता है परन्तु यह नाना प्रकार का संसारी प्रेम उनको प्रभु के पास आने से रोक रहा है। ऐसे लोगों के लिये प्रभु ईसा मसीह का यह बचन है। "कि जो माता अथवा पिता को मुझ से अधिक प्रेम करता है सो मेरे योग्य नहीं यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण गवांवे तो उसको क्या लाभ होगा अथवा मनुष्य अपने प्राण की सन्ती क्या देगा"। जो बीज उत्तम भूमि में डाला जाता है अवश्य बहुत फल लाता है। यह सुसमाचार रूपी बीज नील कण्ठ के मन में जम गया था और क्यों प्रकाश न होवे। जैसा बीज वैसाही उसका फल। बुरे बीज और कडुवे दाने से चैाकस रहें ऐसा न होवे कि हमारी गफ़लत के हेतु शत्रु हमारे हृदय में बुरा बीज बो दे। अब देखिये शास्त्री जी के हृदय में जो बीज बोया गया था उसका प्रकाश

हुआ । उन्होंने १४ मार्च सन् १८४८ में सभों के सामने इस बात को अंगीकार कर लिया कि प्रभु ईसा मसीह जो पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया और उनकी सन्ती क्रूस पर मारा गया और मृत्यु पर जय पाके तीसरे दिन जी उठा सो ही मेरा गुरु और मुक्तिदाता है और इस बिश्वास को सिद्ध करने के लिये पादरी साहिब के द्वारा बपतिस्मा अर्थात् जल संस्कार लिया ॥

हमारे हिन्दुस्तान की रीति है कि यदि कोई उमदा औषधि जानता है अथवा कोई और बात जिससे सब लोगों का भला हो तो उसको छिपाता है परन्तु यह ठीक नहीं है । ईसा मसीह के चेले उन बातों को और उन पदार्थों को जिनसे सब का भला हो बड़े आनन्द के साथ जाहिर करते हैं और न केवल यह पर दुःख भी उठाते और अपना प्राण भी देने को तैयार रहते हैं कि जगत का भला हो और जगत के लोग शुद्ध और पवित्र हो जावें । सो नील कण्ठ जी ने अब ईसा मसीह प्रभु को अपना गुरु कर लिया परन्तु उनकी प्यारी पत्नी अब लों ब्राह्मणी थी और उनके एक बेटी भी थी सो वह भी उसी हालत में थी ईश्वर की कृपा से वे दोनों उसकी सेवका हो गईं ॥

शास्त्री जी के जीवन का हाल बहुत भारी है । हम हर एक बात का बर्णन नहीं कर सक्ते सन् १८५४ में वह काशी नगर छोड़कर इंगलेन्ड देश को अर्थात् बिलायत को गये और वहां महाराजा दलीप सिंह के पण्डित रहे वहां उन्होंने वह सन्मान पाया जो बड़े २ राजाओं को प्राप्त नहीं होता अर्थात् श्री मती महारानी विक्टोरिया से मुलाकात और बात चीत की । कुछ काल वहां रहकर फिर भारत बर्ष को लौट आये । और पूना नगर में बास करके वहां के महाराठा शास्त्रियों और

ज्ञानवान पण्डितों और और लोगों को सुसमाचार अर्थात् प्रभु ईसा मसीह के ज्ञान की शिक्षा देते रहे। उस समय अहमदनगर में ज्ञानी और पढ़े लिखे हिन्दू और पारसियों ने एक सभा खोली थी जिस में वही जवान लोग मेम्बर हो सक्ते थे जो एक ईश्वर को मानें। शास्त्री जी ने वहां भी जाकर प्रभु ईसा मसीह के सुसमाचार से चार व्याख्यान याने लेकचर उनकी सभा में सुनाये। फल यह हुआ कि बहुतों के मनों में यह ज्ञान याने सुसमाचार का ज्ञान धस गया और वे इस धर्म्म का खोज और बिचार करने लगे उन में से तीन विद्वान जवानों ने प्रभु ईसा को अपना गुरु मानकर बपतिस्मा लिया। उन तीनों के नाम ये हैं। पहिला रतनजी नौरूजी, दूसरा सितारा शहर का कासिमभाई और तीसरा सहूदाजी कुकुडे साहिब ये तीनों साहिब बम्बई हाते में मशहूर हैं इस कारण उनके बिषय यहां बहुत लिखना योग्य नहीं है। और इनके द्वारा बहुत लोगों ने ईश्वर के राज्य का सुसमाचार सुना और प्रभु ईसा मसीह पर बिश्वास किया। मौलवी सफदर अली साहिब ने भी जो मध्य प्रदेश में एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर थे नील कण्ठ शास्त्री जी के द्वारा प्रभु ईसा का ज्ञान सुनकर बिश्वास किया था। इसी रीति से वह बड़े २ शहरों में समय समय जाकर लोगों को चिताते और सुसमाचार सुनाते थे कि जगत का प्रकाश और तारणकर्त्ता प्रभु ईसा है उस पर बिश्वास करो। सज्जन और परमार्थी लोगों के जीवन के लक्षण ऐसे ही हुआ करते हैं वह मध्य प्रदेश के दो नगरों में भी कुछ काल तक रहे पहिले चांदा और फिर इन्दौर में इन नगरों में बहुधा अधिक महाराठा बसते हैं जिन के बीच में वह सुसमाचार प्रचार किया करते थे॥

उन्होंने इंगलैन्ड की यात्रा एक बार फिर की और कुछ समय वहां रह कर फिर लौटे और फिर उसी काम में चित्त दिया अर्थात् प्रभु ईसा मसीह पापियों को बचाने और मुक्ति देने को स्वर्ग से आया है। उन्होंने अपना जीवन इसी उत्तम सेवा में बिताया। बम्बई में बहुत यहूदी रहते हैं और बड़े धनवान भी हैं शास्त्री जी ने उनके बीच में बार बार लेकचर दिये जिनका तात्पर्य्य यह था कि जिस मसीह की तुम्हारे पुरखे बाट जोहते थे और जिसके आने के विषय में नबियों ने बार बार कहा है वह मसीह आ चुका और तुम्हारे पितरों ने उसे न पहिचान के क्रूस पर मार डाला पर वह जिन्दा हो गया और उसीकी आज्ञा है कि उसका वचन सारे संसार में सुनाया जावे क्योंकि उसीके द्वारा से पापमोचन हो सक्ता है॥

सन् १८७६ से वह अपने मरने तक पूना नगर ही में रहे। यहां उन्होंने शहर के बीचों बीच एक मकान ले रखा था जहां विद्वान लोग आकर उनसे बात चीत और पूछ पाछ करते थे। इसी समय उन्होंने महाराठी भाषा में एक पुस्तक लिखी जिस में यह सिद्ध किया कि ईसाईधर्म्म निश्चय ईश्वर की ओर से है। आपने पण्डिता रामबाई का नाम सुना होगा वह उस समय तक खीष्टियान नहीं हुई थीं कई बातों में उन को सन्देह था और खासकर यह पुस्तक उन्हीं के समझाने के लिये लिखी गई थी। उन्होंने अपने जीवन में बहुत पुस्तकें लिखीं पर उन सब का सार यह है कि हमारे हिन्दुस्तान के लोग अंधकार को छोड़कर प्रकाश में आवें और वह सच्चा प्रकाश प्रभु ईसा मसीह है। षड् दर्शन दर्पण नाम एक हिन्दी भाषा में पुस्तक है वह भी इन्हीं शास्त्री नील कण्ठ गोरे की बनाई हुई है। उन्होंने अपना जीवन खीष्ट को अर्पण कर दिया था

सो उनके जीवन वृत्तान्त के पढ़ने से हम जान सक्ते हैं। वह बड़े विद्यावान थे परन्तु अपनी विद्या और प्रवीणता का उनको तनिक भी घमंड न था। जिन लोगों ने उनकी संगति की है वे उनकी परम भक्ति उदारता नम्रता सुशीलता दीनता और विद्या में प्रवीणता की बड़ाई करते है। वह सदा ईश्वर भक्ति और प्रभु ईसा मसीह का ज्ञान अपने हिन्दुस्तानी भाइयों को सिखाने और समझाने में तत्पर रहते थे। उनके स्वरूप ही के देखने से मन में आनन्द होता था। कपड़े उनके बहुत साधारण थे और भोजन भी बहुत कम करते थे। वह पूरे संत थे और इस में सन्देह नहीं कि जो प्रभु का मार्ग औरों को दिखाते हैं और उत्तम शिक्षा देते हैं चाहिये कि वे पंडित नील कण्ठ जी का नमूना धारण करें हिन्दुस्तानी और अंगरेज दोनों उनका बराबर आदर सत्कार करते थे। बूढ़े तो हो ही गये थे सो धीरे २ निर्बल हो गये और तारीख़ २९ अक्टोबर १८९५ में पूना नगर में अपने प्रभु में बिश्राम किया॥

——:o:-:o:——

सत्यानधन साहिब का जीवन चरित्र।

—:0:-:-:0:0:—

इस महाशय का अखान भी पढ़ने के योग्य है। जान पड़ता है कि यह दक्षिणी थे और इनके सन्तान के लोग आज लों उस देश में बड़े विख्यात हैं। ऐसा कोई जन न होगा जो उनके नाम को न जानता हो। उनका जन्म सन् १८३० में हुआ था और नाम से ही विदित होता है कि वे किसी ऊंच जाति के हिन्दू थे। इनके पिता सरकार अंगरेज से कोई भारी पदवी पाये थे और अति आदर योग्य समझे जाते थे। चौदह बरस की अवस्था जब सत्यानधन साहिब की हुई तो इनके पिता ने एक मिशन स्कूल में इनको पढ़ने भेज दिया। उस स्कूल के पाठक का नाम महाशय क्रूकशेन्क था परन्तु आप अन्धे थे किन्तु ईश्वर के पूरे भक्त और बालकों को उत्तम शिक्षा देते थे जिससे उनका शारीरिक और आत्मिक दोनों लाभ हो। बहुधा देखने में आता है कि माता पिता अपने बालकों को ऐसी पाठशालाओं में भेज देते हैं जहां वे पढ़ना लिखना तो अवश्य सीख जाते हैं परन्तु और बातों में उनकी अच्छी दशा नहीं रहती है। माता पिता और बूढ़ों का निरादर करते हैं। अपस्वार्थी हो जाते हैं, मुंह से कुबचन निकालते हैं। शीघ्र ही क्रोधित हो जाते हैं और जब किसी इम्तिहान में पास होकर एक सार्टीफिकट पा लेते हैं तो घमण्ड से फूलकर अपने को ऐसा समझने लगते हैं कि जितना वे जानते और समझते हैं संसार में कोई नहीं समझता। कहिये ऐसी शिक्षा से क्या लाभ होगा। हम इस लिये बालकों

को शिक्षा देते और पाठशाला में भेजते हैं कि वे सज्जन और भले हो जावें। सब से भारी बात उनको यह सीखना अवश्य है कि वे अपने प्रभु परमेश्वर को प्रेम करें जिस ने उन्हें उत्पन्न किया और सदा रक्षा करता रहता है। उसकी सारे तन मन धन से सेवा करें और उसका राज्य अपने देश में प्रचारें इसके सिवाय यह भी अति उचित है कि अपने पड़ोसियों को अपने समान प्रेम करें और सदा भलाई करने में सिद्ध रहें परन्तु बड़े शोक की बात है कि सब पाठशालाओं में बालकों को ऐसी शिक्षा नहीं मिलती और इससे देश की बड़ी हानि होती है। कभी २ देखने में आता है कि जिन लड़कों के माता पिता ने कभी शराब नहीं पी न कभी चुरट और शिगार पिया उनके लड़के पढ़ लिखकर ऐसी बुरी बुरी बातें सीख जाते हैं कि कहने के योग्य नहीं पर सत्यानधन साहिब ऐसी पाठशाले में डाले गये थे जहां प्रत्येक बालक को एक अनोखी पुस्तक भी एक घंटे सिखाई जाती थी जिसका नाम धर्म्मपुस्तक अर्थात् बैबल है। जैसी की बहुधा लड़कों की रीति है कि उन में से बहुत इस पुस्तक को मन लगा के नहीं पढ़ना चाहते वही सत्यानधन की भी हुई कि उन्होंने उस अन्धे गुरु क्रूकशेन्क महाशय से क्रोधित होकर कहा मैं तो बैबल न पढ़ंगा और न केवल इतना ही किया पर और लड़कों को बहका के और एका करके कहा कि साहिब यदि आप हमको यह पुस्तक पढ़ावेंगे तो हम सब के सब पाठशाला छोड़ देवेंगे। साहिब ने उत्तर दिया कि हे बालको इसकी कुछ चिन्ता नहीं तुम चाहो तो सब के सब पाठशाला छोड़ दो परन्तु धर्म्मशास्त्र पढ़ाना मैं कदापि किसी रीति से त्याग न करूंगा और उसी दिन से क्रूकशेन्क साहिब और भी अधिक

मन लगाके बैबल की शिक्षा देने में तत्पर हुये यहां लों कि कभी २ लड़के उनकी शिक्षा से थर थराने लगते थे जैसा कि प्राचीन काल में पावल प्रेरित की शिक्षा से फीलिक्स राजा कांपने और थर थराने लगा था यदि चाहो तो इस बर्णन को प्रेरितों की क्रिया के २६ वें पर्ब्ब में पढ़ लो बिषय बहुत मनोहर और पढ़ने के योग्य है ॥

सत्यानधन साहिब तीन बरस लों उस उत्तम भक्त से शिक्षा पाते रहे। आप किसी कुए पर जाइये और देखिये कि बड़ी बड़ी शिला निर्बल घास फूस की रस्सियों के रगड़ के बार २ खाने से घिस जाती हैं तो क्या उत्तम शिक्षा से अन्धकार नाश न होगा। किसी ने कहा है—

अति से रगड़ करे जो कोई।
अनल प्रगट चन्दन से होई ॥

उनके हृदय में प्रकाश होने लगा। धर्म्म सूर्य्य की किरणें चमकने लगी। यह ज्ञान हुआ कि मनुष्य पापी है। मैं भी तो मनुष्य का पुत्र हूं अवश्य मेरा मन पाप की ओर दौड़ने चाहता है? इस से मैं कैसे निस्तार पाऊं। मन की शुद्धि और पवित्रता कैसे प्राप्त हो। किस पास जावे पापी जन, किससे पावे मुक्ति का धन, किससे मिले मन का ज्ञान, किससे मिले मुक्ति का दान ॥

केवल यह जान लेना कि हमारे देश का धर्म्म मिथ्या और कल्पित है बश नहीं बर्तमान समय की तो यही दशा है कि लाखों युवा पुरुष जिन्होंने स्कूलों और कालेजों में भली भांति विद्या प्राप्त की है कहते हैं कि हमारे देश के और पुरुषों के धर्म्म में खोट है हां बहुत ऐसे भी हैं जो जाति पांति का भेद नहीं रखते अपने देश धर्म्म पर हंसते और अपने मन से नये नये धर्म्म निकालते जाते हैं पर इससे क्या

लाभ । शुद्धता, पवित्रता, कुशलता, मेल, मिलाप, प्रेम, शांति, ईश्वर की भक्ति और पापों की क्षमा कहां हैं। धन्य वे जिन के मन शुद्ध हैं क्योंकि वे ईश्वर को देखेंगे। सत्यानधन ने कंकड़ों को फेंक के अपनी झोली में हीरे और मोती भर लिये उसने जाना कि मैं बड़ा पापी हूं और यीशु ख्रीष्ट पापियों के पापों को नाश करने और मन की शुद्धि और पवित्रता देने को सिद्ध है और उसने भारी २ दुःख और क्लेश सह के उसको अपना गुरु और त्राणकर्त्ता मान लिया। प्यारो ख्रीष्टियान होना बहुत कठिन बात है। माता, पिता, भाई, बन्धुओं, जाति, पांति, साथियों इत्यादि से अलग हो जाना कैसा कठिन है। हां यह बात तो है कि जो ख्रीष्टियान होना चाहता है वह कभी अपने प्यारों से अलग होना नहीं चाहता पर शोक की बात है कि वे आप ही उसको अलग कर देते हैं। सत्यानधन ने चाहा था कि वह निकोदीमुन के समान चुप के से उसका दास बन जावे परन्तु ईश्वर का आत्मा तो उसे यह शिक्षा देता था कि बहादुर के समान मेरे नाम को सभों के सामने मान ले और अंत में यही हुआ कि वह ख्रीष्ट के पास सभों को छोड़ के आया और उससे शांति और पापों की क्षमा प्राप्त की। उसके ख्रीष्टियान होते ही चारों तरफ बड़ी हल चल मच गई। सब विद्यार्थियों ने पाठशाला जाना छोड़ दिया और लोग सत्यानधन को भी नाना प्रकार से सताने लगे। कचहरी अदालत में भी वह लाये गये परन्तु उस परमेश्वर ने उनकी सहायता की और उन्हें बचाया॥

सन् १८४१ में वह जल संस्कार पाके प्रभु के दास हुये ख्रीष्टियान होने के उपरान्त उन्होंने शिक्षा पाना न छोड़ा परन्तु शिक्षा पाके उन्होंने औरों की सहायता की। सन् १८५१

में उन्होंने मेट्रिक्यूलेशन की परीक्षा में पहिला दरजा मेडल के साथ प्राप्त किया। अंगरेजी में वह बहुत योग्य थे और अपनी सारी विद्या और ज्ञान अपने देश के बड़े और छोटे लोगों के सुधारने और उनको प्रभु के राज्य में लाने में खर्च किया। प्रत्येक जन को उचित है कि जो उत्तम दान ईश्वर उसको देता है वह उसको संसार की भलाई में लगा देवे। उनकी शिक्षा और परिश्रम के द्वारा सैकड़ों मनुष्य प्रभु के सेवक हो गये। उनका सब बखान करना तो कठिन है परन्तु यहां थोड़ा सा लिख दिया गया है जिससे प्रगट होय कि मसीही होने से क्या कुछ होता है॥

जिस दिन से सत्यानधन साहिब ने ख्रीष्ट पर बिश्वास किया उसी दिन से मन में यह ठान लिया कि मैं अपने देश के लोगों को किस प्रकार से ख्रीष्ट प्रभु के चरणों पर लाऊं। मैंने इस स्थान में उनकी पत्नी का कुछ वर्णन नहीं किया। वह भी एक कुलीन भक्त की बेटी बड़ी धर्मोपकारणी और सुशीला थीं। सन् १८७८ में वे दोनों पति पत्नी इंगलेन्ड देश की यात्रा करने को गये और वहां रहकर उन्होंने कई व्याख्यान हिन्दुस्तान के विषय सुनाये। वह कहते हैं कि शोक की बात है की बहुत से यूरोप निवासी भारत बर्ष में रहकर ख्रीष्ट को अपने जीवन में नहीं दर्शाते हैं और इस कारण अन्य मता-बलम्बी उनको देख कर और उनके कामों को सोच कर ख्रीष्टधर्म्म से भागते हैं। विलायत के बहुत लोगों के बिषय उनका बिचार था कि वे बड़े परमार्थी दयावन्त संयमी और ऐसे लोग हैं जिन्होंने पूरी रीति से अपने को ईश्वर के अर्पण कर दिया है॥

सत्यानधन साहिबने अंगरेजी और तामिल भाषाओं में कई पुस्तकें लिखीं हैं जो बहुत मनोहर और पढ़ने के योग्य हैं और

कई उत्तम बातें देश की भलाई के लिये लिखीं हैं जिनका ब्योरा यहां करना कठिन है। वह परिश्रम करने और भलाई करने में कभी आलसी न रहते थे। उनके जीवन में उनको बड़ी अभिलाषा इस बात की रहती थी कि मैं किस प्रकार से अपने देशी भाइयों को प्रभु ख्रीष्ट के पास लाऊं। सन् १८८२ में उन्होंने मद्रास बिश्वपाठशाला की ओर से फेलोआव-मद्रास यूनिवरसिटी का पद पाया और सन् १८८४ में वहां के लार्ड बिशप साहिब ने बी॰ डी॰ की पदवी से उन्हें आभू-षित किया। वह अपनी मृत्यु लों विश्वास योग्य और अपने काम में तत्पर रहे और सन् १८९० में थोड़ी सी बीमारी के होने पर परलोक को सिधारे। उनकी मृत्यु का समाचार सुनके बहुत लोगों को शोक हुआ और बड़े २ महाशयों ने समाचार पत्रों और व्याख्यानों के द्वारा अपना २ शोक प्रकाशित किया॥

आप उनके जीवन के पढ़ने से जान सक्के हैं कि वह स्वार्थी नहीं थे परन्तु अपने प्रभु के पद चिन्हों पर चल के संसार को उसके पास खींचना चाहते थे। प्रत्येक सच्चे ख्रीष्टियान का जीवन ऐसा ही होना चाहिये॥

वह मनुष्य क्या ही धन्य है जो पापियों के मत पर नहीं चला और अपराधियों के पथ पर खड़ा नहीं हुआ और निन्दकों की सभा में नहीं बैठा परन्तु परमेश्वर की व्यवस्था में उसकी प्रसन्नता है और उसकी व्यवस्था पर वह दिन रात ध्यान करेगा सो वह उस पेड़ के समान होगा जो जल की धारों पर लगाया गया जो अपना फल अपनी ऋतु पर देगा और उसके पत्ते न मुरझावेंगे और जो वह करेगा सब भाग्यवानी से करेगा॥

---:0: :0:---

अन्ना बाई अर्थात सत्यानुधन बी. डी. साहिब की पत्नी का जीवन वृत्तान्त।

------:0:0:--:0:0:------

सब काल और सब देशों में बहुत स्त्रियां बड़ी नामी और माननीय होती हैं हमारे भारतवर्ष में भी स्त्रियां इस बात में प्रशंसा योग्य हैं कि वे बड़ी धर्म्मी और बिश्वास योग्य गिनी जाती हैं। हां उनको अबला नाम तो अवश्य दिया गया है सो इस में सन्देह नहीं कि वे ऐसी ही हैं। इसी कारण प्रत्येक पुरुष को चाहिये कि उनका आदर और सन्मान करे। बहुधा करके देखने में आया है कि जिन बालकों की माता धर्म्मी, सुशील, सत्यवादी और मिलनसार और मिठबोली होती हैं उनके बालक भी वैसे ही निकलते हैं। प्राचीन काल में इस देश में स्त्रियों का बड़ा आदर होता था यह इस देश की प्राचीन पुस्तकों से प्रगट है। हां कहीं कहीं शास्त्रों और पुराणों में उनको ऐसा ठहरा दिया है कि उनकी बातों पर बिश्वास न करना चाहिये वे औगुणों से भरी हैं पर यह दोष प्रत्येक स्त्री पर लगाना असम्भव और भारी क्रूरता है परन्तु शोक की बात है कि ऐसी दशा अब हमारे देश के बहुत लोगों की हो गई है पर प्राचीन काल में यह न थी। एक दो वाक्यों से यह बात समझ में आ सक्ती है कि जब कभी हम मार्ग में चले जाते हैं तो बहुधा यह सुनते हैं। सीता राम, राधा कृष्ण इन से जान पड़ता है कि स्त्रियों का बड़ा मान होता था नहीं तो नमस्कार करने में उनका नाम पुरुषों से पहिले न

आता इसका कहां तक बखान करें। परन्तु उस पिता परमेश्वर का जो हमारा सृष्टिकर्त्ता, पालनकर्त्ता और मुक्तिदाता है। कोटान, धन्यवाद हो कि उन दिनों को हम कुछ कुछ फिर देखने लगे हैं जिन में स्त्रियों का आदर सन्मान होता था। और यह ख्रीष्टियधर्म्म की शिक्षा का कारण है। शिक्षा का फल अवश्य प्रगट होता है इस कारण ईश्वर के भक्तों को अति अवश्य है कि वे इस बात में साहस करते जावें और हिम्मत न हारें। संसार के सुधारने और ईश्वर के उत्तम और आनन्ददायक राज्य के प्रचार करने में इतिहास से प्रगट होता है कि बहादुर और भक्त जनों ने अपने प्राणों को भी अर्पण कर दिया है॥

किसी स्थान में एक कुंवारी स्त्री के विषय यह लिखा है कि जब्रायेल दूत ने आके उसे प्रणाम करके कहा "हे अनुग्रहीत कल्याण परमेश्वर तेरे संग है स्त्रियों में तू धन्य है। यदि हम स्त्रियों के प्रशंसा विषयक इतिहासों का बर्णन करने लगें तो अन्ना बाई के जीवन वृत्तान्त लिखने का अवसर न पावेंगे इस कारण अब अन्ना बाई का थोड़ा सा बखान करें॥

यह अन्ना बाई दक्षिण देश के एक मनोहर और सुन्दर नगर में तारीख़ २० अप्रेल सन् १८३२ में उत्पन्न हुई थीं। उन के पिता बड़े आदर योग्य पुरुष और ईश्वर के परम भक्त थे और यह उनकी अकेली पुत्री थीं इस कारण माता पिता की बड़ी प्यारी थीं। इनके माता पिता का बिश्वास ख्रीष्टियानधर्म्म पर था जिस धर्म्म के विषय आज लों हमारे देश निवासी बहुत ही थोड़ा जानते होंगे। जान तो जावें परन्तु शोक की बात है कि वे जानना नहीं चाहते और जब कोई उपदेशक उनको समझाने लगता है तो देखने में आता कि बहुधा

बहुत पक्ष पात करते हैं और शीघ्र ही एक कान से सुनते और दूसरे कान से उड़ा देते हैं। रामायण में एक श्लोक है—

सुलभाः पुरुषा राजन् सततंप्रिय वादिनः।
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥

अर्थ इसका यह है कि हे राजा सदा मीठी २ बातों के कहने वाले मनुष्य बहुत मिल सक्ते हैं पर जो बात ऐसी है कि सुन्ने में तो कड़वी पर हित करने वाली है वैसी बात का कहने वाला भी दुर्लभ है और सुन्ने वाला भी दुर्लभ है। बाल अवस्था में अन्ना बाई को दुलार से माता पिता अन्ना अणेकियम नाम से पुकारते थे इन के पिता देव सगयम जान, ख्रीष्टियान मण्डली के पादरी साहिब थे जो दक्षिण के किसी बहुत प्राचीन ख्रीष्टियान घराने से सम्बन्ध रखते थे इसी घराने में दानिएल पिलाइया साहिब नव्वाब हैदर अली की सेवकाई में कोई भारी पदवी पर स्थित थे और हैदर अली भी इनकी बिश्वास योग्यता और अपने ख्रीष्टियानधर्म्म पर पक्के बिश्वासी होने के कारण से इनका बड़ा आदर मान करता और भरोसा रखता था। दानिएल पिलाइया साहिब ने अपने जीवन काल में कई पुस्तकों का टीका जरमन भाषा से तामिल में किया था। ये पुस्तकें भक्ति सम्बन्धी हैं जिन को दक्षिण के ख्रीष्टियान आज कल भी बड़े प्रेम से पढ़ते हैं। अन्ना बाई के पिता देव सगयम जान बड़े नामी हो गये हैं॥

अब जिस दशा में छोटी अन्ना बाई अपने माता पिता की अकेली पुत्री थी और पिता उसको बहुत दुलार प्यार करते थे और जब प्रभु ख्रीष्ट के नाम का उपदेश करने कहीं बाहर जाते थे तो अपनी पुत्री को भी साथ ले जाया करते थे और

वह अपनी लड़काई से ही कई छोटी २ बातों में अपने पिता की सहायता किया करती थी। पिता की इच्छा यह हुई कि अन्ना अंगरेजी भाषा सीखे और इस हेतु से वह कई अंगरेज मेम साहिबान के हाथों में छोड़ दी गई जो अन्ना को बड़े प्रेम के साथ रखती थीं और शिक्षा दिया करती थीं। कुछ काल बीतने पर यह लकड़ी भली भांति अंगरेजी बोलने लगी इससे उसका बड़ा ही लाभ हुआ क्योंकि मद्रास नगर में उस का बड़ा आदर मान होने लगा और बहुत से सज्जनों से इस भाषा जानने के द्वारा उसकी जान पहिचान हो गई। एक समय वह अपने माता पिता के साथ किसी अंगरेज नवाब जादी के पास भेंट करने को गई। नवाब साहिब की मेम साहिबा उस लड़की की उत्तम अंगरेजी बोलने पर बहुत प्रसन्न हुईं क्योंकि उस समय की दशा यह थी कि दक्षिण देश में स्त्री तो क्या पर पुरुष भी इस भाषा को बहुत ही कम जानते थे। देखो विद्या के पढ़ने से कैसे लाभ होते हैं। हमारे देश के लोगों की आखें अब लों नहीं खुली हैं। वे कहते हैं लड़कियों को विद्या पढ़ाने से क्या लाभ क्या उनको कचहरी दरबार करना है और इस कारण लाखों लड़कियां अज्ञान रहती हैं और इस दशा में देश की उन्नति नहीं होती। प्यारे पढ़नेहारे एक पहिये की गाड़ी नहीं चल सक्ती। लड़का तो बी॰ ए॰ पास किया हुआ है पर जिस लड़की से उसका गठ बंधन होता है वह महा मूढ़ और अज्ञान है तो ऐसी दशा में मेल और कुशल आनन्द कैसे हो सक्ता है। जब लड़के उत्पन्न होते हैं तो उनकी क्या दशा है क्योंकि माता तो अज्ञान है जिसके साथ लड़के लड़कियां अपना बालापन बिताते हैं। चाहिये कि लड़के लड़कियों को माता पहिले अपनी गोद में ही शिक्षा

देवें और शिक्षा केवल अक्षरों और भाषा का जानना नहीं है परन्तु ईश्वर की भक्ति और प्रेम में शिक्षा दी जावे। वह देश धन्य है, वह घराना धन्य है, जिसमें लड़के लड़कियां अपनी लड़काई से उसको जानने लगते हैं जिससे जीवन का सुधार होता और मुक्तिरत्न प्राप्त होता है यदि बुरा न लगे तो यह सत्य है कि हिन्दुस्तान में जो हिन्दू और मुसलमानों में से प्रभु यीशु ख्रीष्ट को धारण कर लेते हैं यह उत्तम अवसर उनको मिलता है पर शोक की बात है कि उन में से भी बहुतेरे आलसी हो जाते और संसारी रंग में रंग जाते और नाम के ही ख्रीष्टियान रह जाते हैं। ऐसे लोग निकम्मे हैं उनका जन्म ही व्यर्थ है। वे बकरी के स्तनों के समान हैं जो उसके गले में रहते हैं परन्तु उनसे दूध प्राप्त नहीं होता। वे अपने प्रभु को अपने धर्म्म को और अपने ख्रीष्टियान भाइयों को लजाते हैं। ख्रीष्ट प्रभु का बचन है कि तुम्हारा प्रकाश संसार के लोगों के सामने ऐसा चमके कि वे तुम्हारे शुभ कामों को देखकर ईश्वर का गुणानुवाद करें। लेखक जब ऐसे नाम के ख्रीष्टियानों को देखता है तो उनके देखने से उसको भी लज्जा आती है। जो कोई ख्रीष्टियान ऐसी दशा में हो उसको अब भी जागने और चेतने का अवसर है॥

सन् १८४९ में अन्ना बाई का ब्याह उस सज्जन सत्यानधन के साथ हुआ जो ईश्वर विद्यालय में पादरी साहिब होने के लिये शास्त्रों का अभ्यास कर रहा था। ईश्वर ने ठीक जोड़ा जोड़ दिया और इससे उसके नाम की महिमा और सन्मान हुआ सन् १८५९ में अन्ना बाई के पति को किसी नगर में जाना पड़ा कि वहां जाके रहें और ख्रीष्ट प्रभु के नाम का उपदेश लोगों को देवें। यहां अन्ना बाई ने हिन्दू और मसीही बालकों

के लिये एक पाठशाला खोल दी जिसमें वह अपने आप शिक्षा देने लगीं। इसके उपरान्त सन् १८६३ में वे दोनों मद्रास शहर को गये और वहां ईश्वर ने उन्हें जीवन भर का परमार्थिक और अति उत्तम काम दिया जो किसी रीति से बिसराया नहीं जा सक्ता और भारतवर्ष की अबलाओं को आज लों जिस्से बड़ा ही लाभ पहुंच रहा है वह यह है कि जो स्त्रियां परदे में रहती है और बाहर आती जाती नहीं हैं उनको शिक्षा दी जावे। इस काम की नेव डालनेहारी अन्ना बाई थीं। आप प्रत्येक बड़े नगर में ऐसा काम होते देखते हैं कि अंगरेज मिस साहिबान और हिन्दुस्तानी मसीही स्त्रियां प्रतिदिन घर घर जाकर स्त्रियों को उत्तम २ काम सिखलातीं पढ़ाने लिखाने में सहायता करतीं और उन्हें सत्य मार्ग बताती हैं न केवल यही पर इसी काम के द्वारा इन दिनों में स्त्रियां डाक्टर और वैद्य की परीक्षा में कामयाबी प्राप्त कर के हमारे हिन्दुस्तान की स्त्रियों की व्याधि और रोगों का चिकित्सा भी करती हैं। ये सब खीष्टधर्म्म का प्रभाव है। स्त्रियों ने तो बड़ी २ बहादुरी के काम किये हैं इसको लोग इतिहास द्वारा जानते होंगे पर यह सब से बढ़कर है जो अन्ना बाई ने किया। जब इस काम को उन्होंने आरम्भ किया था तो बड़ी बड़ी कठिनाइयां सहनी पड़ीं परन्तु धीरज और साहस से उन्होंने जय पाई और खीष्ट का सुसमाचार अपनी हिन्दू बहिनों को सुगमता से देने लगीं। उन्होंने इसके सिवाय कई पाठशाला भी लड़कियों के लिये मद्रास नगर में खोल दीं। इन दोनों कामों के करने अर्थात् लड़कियों और स्त्रियों को शिक्षा देने में उन्होंने अपना सारा जीवन बिताया और ऐसे ऐसे कामों में बड़ी बिश्वास पात्र पाई गईं। उनकी पुत्रियों

ने भी इसी काम के करने में उनका अनुकरण किया और इस रीति से एक स्त्री के द्वारा हिन्दुस्तान को कितना बड़ा लाभ पहुंचा। लोग कभी कभी यह दृष्टान्त कहा करते हैं। जैसे जेके माई बाप तैसे तेके लरका, जैसे जेके घर द्वार तैसे तेका फरका। सो यह कहावत ठीक है। एक बात कहने और सोचने के योग्य है सो यह है कि आप हिन्दुस्तान की यात्रा उत्तर से दक्खिन और पूरब से पच्छिम तक कीजिये पर आप इस बात को कभी न सुनियेगा कि कोई माता पिता लड़की के जन्म से प्रसन्न भया हो। वे चाहते हैं कि लड़की उत्पन्न ही न होवे कभी २ यह भी देखने में आया है कि हिन्दुस्तान के ख्रीष्टियान भी लड़की के जन्म से कुछ अप्रसन्न से हो जाते हैं और यह केवल संगत का प्रभाव और देश प्रभाव है। पर इतना कहना बस है कि ऐसा बिचार ठीक नहीं यह केवल अज्ञानता का कारण है जब हमारे देश में उस सत्य परमेश्वर का ज्ञान फैल जावेगा तब इस प्रकार का अंधकार अवश्य नाश हो जावेगा। क्योंकि परमेश्वर का ज्ञान ही सब प्रकार के अंधकार और अज्ञान का नाश करनेहारा है। प्यारो जो हो सो हो उचित है कि हम उस सत्य ज्ञान की खोज करें॥

अन्ना बाई भी तो एक लड़की ही थी और उसके उत्तम स्वभाव और भलाई के कारण जो उसने बड़ा क्लेश उठा के हमारे देश की कन्याओं को सुधारा और उन में विद्या और ज्ञान का प्रचार किया इससे बहुत सज्जन जनों की गाढ़ी मित्रता प्राप्त की। उन में से दो का नाम लिखना बहुत अवश्य है जिन लोगों ने हिन्दुस्तान का इतिहास पढ़ा है वे उन लार्ड साहिबों को जानते होंगे। पहिले लार्ड नेपियर साहिब की मेम साहिबा अन्ना बाई के कामों से बहुत प्रसन्न थीं और

उनकी भारी मित्र हो गईं। और इस प्रसन्नता और मित्रता का निशान यह था कि लार्ड साहिब की मेम साहिबा ने उन को एक उत्तम पाठशाला जोनेपियर पार्क में बनवाई थी अन्ना बाई को दे दी। दूसरे होवर्ट साहिब की मेम साहिबा ने भी अन्ना बाई के काम में वैसी ही प्रसन्नता और मित्रता प्रगट की जैसा कि ऊपर बर्णन हुआ यह होवर्ट साहिब मद्रास के गवर्नर थे। देखिये जो कोई ईश्वर की महिमा प्रगट करे चाहे वह गरीब हो चाहे अमीर स्त्री हो अथवा पुरुष अवश्य ईश्वर उसको आदर और सन्मान से आभूषित कर देता है। हे पढ़ने हारो जब हमारा देश ईश्वर से डरेगा उसको प्रेम करेगा और उस प्रभु ख्रीष्ट का ज्ञान प्राप्त करके उसका अवलम्बन करेगा तब ही कुशल और कल्याण को प्राप्त होगा। तरह तरह के नये नये धर्म्मों के डंके और नाना प्रकार की संसारी विद्या इत्यादि से कुशल प्राप्त नहीं हो सक्ती। ये सब तो नाना बिधि के पदार्थ हैं परन्तु नमक यीशु ख्रीष्ट है उसके बिना ये सब फीके हैं। इस नमक को अपने काम में लाओ और चखो और जानो कि वह बड़ा मज़ेदार है और संसार को सुधारने हारा है अन्ना बाई केवल पाठशालाओं ही में शिक्षा न देती थीं परन्तु अपने देश की बहिनों के लिये उन्होंने कई उत्तम पुस्तकें भी लिखीं जिन से स्त्रियों को बहुत लाभ हुआ॥

इसके उपरान्त वह अपने पति के साथ छः महीने के लिये बिलायत गईं और वहां तन मन से उन्होंने धनी ख्रीष्टियान लोगों में परिश्रम करके उन्हें समझाया कि भारतबर्ष की अबलाओं की आत्मिक और शारीरिक सहायता करने में यत्न करें। बिलायत वालों के लिये वहां उन्होंने एक पुस्तक लिख कर भी छपवा दी जिसमें भारतबर्ष की अबलाओं का बखान

भली भांति से लिखा था। बहादुर स्त्री और पुरुषों का यही धर्म्म हैं कि वे अपने देश की भलाई में जीवन बितावें अपने पड़ोसियों को प्यार करें और जो कुछ उचित और ईश्वर की आज्ञा अनुसार है उसके समान अपना जीवन काटे। जहां सुमति कुशल और ईश्वर का भय है वहां सब कुछ कल्याण ही होता है परन्तु जहां लोग नाना प्रकार के जाति के बन्धन, मूर्त्तिपूजा, द्वेश, ईर्षा और अपस्वार्थीपन के बश में पड़े हुये हैं वहां शांति और कुशल का केवल नाम ही नाम है। विद्या पढ़ना अति उत्तम तो है परन्तु यदि सत्य ईश्वर का ज्ञान नहीं है तो विद्या से कुछ लाभ नहीं। अन्ना बाई को ऐसे उत्तम गुण कहां से प्राप्त हुये वह सदा कंगालों के बीच में जातीं उनकी हर प्रकार से सहायता करतीं उन्होंने अपना सारा जीवन अपने देश की लड़कियों और स्त्रियों की भलाई करने में बिताया। अपनी लड़कियों के लिये एक उत्तम नमूना हुईं, अपने पति के काम में सदा सहायक रहीं। क्या घर में क्या बाहर और हर कहीं उनका उत्तम जीवन एक नमूना था। वह नम्र हृदय, सीधी सभों को प्रेम करनेहारी, लज्जावन्त और निर्दोषी थीं। उनका जीवन शुद्धता और पवित्रता और नेक कामों से परिपूर्ण था। चाहिये कि हमारे देश की बहिनें ऐसी स्त्रियों का बखान सुनकर अपना जीवन उनके समान बितावें। परन्तु सोचने की बात है कि ऐसा उत्तम जीवन और आचरण कहां से प्राप्त होता है। हां हम मान तो लेते हैं कि हमारे देश की स्त्रियां भी कई उत्तम गुणों से बिभूषित हैं पर अन्ना बाई की समानता को प्राप्त नहीं कर सक्तीं। स्त्री और पुरुष, बालक और बृद्ध, कंगाल और धनी, राजा और प्रजा सभों के सुधरने का हमारी समझ में एक ही उपाय है कि वे उस सत

गुरु प्रभु यीशु ख्रीष्ट जगततारक के जीवन का अनुकरण करें। कदापि हमारी इस बात पर लाेग ध्यान न करेंगे और कहेंगे कि हम पक्ष पात करते हैं ताे हम केवल उनसे यही कहते हैं कि भाई आप कृपा करके और परमेश्वर से प्रार्थना कर कर के सुसमाचार काे पढ़ाे, डराे मत, लज्जित मत हाे और हमें बिश्वास है कि ईश्वर अपने पवित्रात्मा के द्वारा आप की प्रेरणा करेगा और आप काे सत्य मार्ग पर लावेगा॥

विलायत से लाैटने पर अन्ना बाई कुछ रोगी सी होने लगीं, शरीर धीरे २ निर्बल होने लगा और कभी २ बहुत दुःखी हो जाया करती थीं परन्तु इन सब दुःखों के होने पर भी वह आनन्द और शांति से रहती थीं। देखिये इस संसार में शरीर का रोग और मृत्यु का दुःख और अपने कुटुम्ब से बिछुड़न अधर्म्मी और धर्म्मी सभों को होता है परन्तु जो ईश्वर के प्रेमी हैं उनको दुःख और मृत्यु में भी शांति और आनन्द है। भक्ति की कसौटी तब जान पड़ती है जब आखों से दिखाई नहीं देता, शरीर निर्बल हो जाता, मुंह से ठीक २ वाक्य नहीं निकलते, थोड़ा सा भी काम करने से भारी थकावट आ जाती, अपने पराये को कठिनता से पहिचानता और स्मरण शक्ति काम नहीं देती उसी दशा में बिदित हो जाता है कि वह जन स्वर्गीय है अथवा संसारिक चाहे वह रोगी होके मृत्यु के निकट पहुंच गया हो और बोलने की भी शक्ति न हो तौ भी उसके एक दो बचनों से उसके मन की दशा प्रगट हो जाती है। धर्म्म-पुस्तक में लिखा है कि धर्म्मी की मृत्यु धन्य है॥

जौ लौं देह निरोग और जौ लौं जरातन।
अरु जौ लौं बलवान आयु अरु इन्द्रिन के गन॥

तौ लौं निज कल्याण करन कौं जतन बिचारत ।
वह पण्डित वह धीर बीर जो प्रथम सम्हारत ॥
फिर होत कहा जर्जर भये जप तप संयम नहिं बनत ।
भभकाय उठ्यौ निजभवन जबतब क्योंकर कूप हि खनत ॥
सौ बरसन की आयु राति में बीतत आधे ।
ताके आधौं आध वृद्ध बालापन साधे ॥
रहे यहै दिन आधि व्याधि गृह काज समोयो ।
नाना बिधि बकवाद करत सबहिन को खोयो ॥
जल की तरंग बुद बुद सदृश देह खेह हो जात है ।
सुख कहो कहा इन नरक कौं जासौं फूलत गात है ॥

——:o: :o: ——

मिस लीलावती सिंह।

प्रिय पाठको आशा है कि आप ने इस छोटी सी पुस्तक को भली भांति पढ़ ली होगी और इन जीवन वृत्तान्तों के पढ़ने से कुछ शिक्षा भी प्राप्त की होगी। मनुष्य का सारा धर्म्म इसी बात में है कि अपने कर्त्ता परमात्मा को प्रेम करे और उसकी समानता प्राप्त करता जावे और इस बिगड़े और पापमय संसार को सुधार के सुन्दर और पवित्र बनाता जावे तो यह संसार मनोहर और स्वर्ग समान हो जावेगा। आशा है कि इन थोड़े से पत्रों के पढ़ने से आप थक न गये होंगे। किसी ने कहा जहां सौ तहां नौसो आप से बिन्ती है कि धीरज से मिस लीलावती सिंह के जीवन को भी पढ़ लेवें॥

संसार में आज लों ऐसी बहुत जातियां हे जो बेटी के जन्म से कदापि आनन्द नहीं होतीं मानों उनके मुंह उनका जन्म सुनने से काले हो जाते हैं। ऐसी जातियां इसी देश में थी जो लड़की को उत्पन्न होते ही नाश कर डालतीं थी पर ईश्वर का धन्य हो कि सरकार अंगरेज बहादुर ने इन कुरीतियों को बन्द कर दिया और विद्या और खीष्टियानधर्म्म की शिक्षा से हवा उलटी बहने लगी कि वर्तमान समय में लोग अपनी अपनी पुत्रियों, स्त्रियों और बहिनों को पाठशालाओं में भेज २ कर शिक्षा दिलवा रहे हैं। ऐसे सत्य धर्म्म की हम प्रशंसा करते हैं जिस में स्त्रियों का आदर मान और सत्कार किया जाता है। हम उन धर्म्मी और योग्य स्त्रियों को धन्य कहते हैं जो आज काल घर घर जाकर शिक्षा देतीं और संसार

के सुधारने की नीव डाल रहीं हैं और हम को आशा है कि परमेश्वर उन की शिक्षा और परिश्रम पर अपनी बड़ी आशीष देगा। स्त्रियों का धर्म्म ऐसा बर्णन किया गया है:—

वह स्त्री धन्य है जो अपने पति की आज्ञानुसार चलती है जो किसी की बुराई और निन्दा नहीं करतीं। अपना ठीक ठीक काम घर में करती और घर को शुद्ध और स्वच्छ रखती है अपने लड़के लड़कियों को उत्तम शिक्षा देती ईश्वर का मार्ग सिखाती और उन्हें उत्तम मार्गों में चलाती है। वह स्त्री धन्य है जो प्रातःकाल उठकर ईश्वर से प्रार्थना करती और अपने बच्चों को भी उसी मार्ग पर चलाती है। जिस का आचरण उत्तम और पवित्र है जो अपने बालकों को स्वच्छ और सुथरा रखती है। अपने पति के दुःख सुख में भागी रहती है। जो झगड़ालू नहीं है और न क्रोधित होती है परन्तु प्रत्येक को कोमल और मधुर उत्तर देती है। जिस के मुंह से गाली गलोज और कठोर बचन नहीं निकलता जिस के बिचार में सदा यह रहता है कि ईश्वर उसे देखता रहता है। जो व्यर्थ खर्च नहीं उठाती और अपने पति की सम्मति सदा सब बातों में लिया करती है। जो घर की प्रत्येक वस्तु को उस के ठीक ठीक स्थान में रखती और घर में जाला धौंसा नहीं रहने देती है। धन्य है वह स्त्री जो ठीक समय पर अपने सन्तान सहित ईश्वर उपासना घर में पहुंच जाती और ईश्वर का बचन अपने बालकों सहित मनसा बाचा और कर्मणा से सुनती और पालन करती है। धन्य है वह स्त्री जो घर घर घुम कर पंचयात में नहीं पड़ती और जो अपनी पड़ोसनियों के आचरण सुधारने के लिये एक उत्तम नमूना हो जाती है। जो सदा सीने पिरोने अथवा घर के काम काज वा पराई सेवा

में लगी रहती जो झूठ नहीं बोलती और मिथ्या भाषण से घिन करती है जो सभों का आदर करती और सदा ईश्वर का भय रखती है ऐसी स्त्री धन्य है। ऐसी ही स्त्रियों में से लीलावती सिंह नाम एक हुई है जो थोड़े दिन हुये कि स्वर्गधाम को अमरीका देश में प्राप्त हुई। आशा है कि इस देश में बहुत लोग होंगे जिन्होंने उस के विषय कुछ न कुछ सुना होगा। परन्तु बहुत ऐसे हैं जो उसके विषय कुछ नहीं जानते सो उन के लिये हम यहां थोड़ा सा वर्णन मिस लीलावती सिंह के विषय लिखते हैं। इस में तो सन्देह नहीं है कि पुरुषों ने इस संसार में बड़े बड़े काम किये हैं परन्तु वर्तमान समय में ख्रीष्टियान स्त्रियां वह काम कर रही हैं जिस की प्रशंसा प्रत्येक बुद्धिमान पुरुष को करना अवश्य है हां कदापि कोई कहेगा कि हिन्दूधर्म्म में भी ऐसी स्त्रियां हुई हैं जिन्हों ने बड़े बड़े काम किये हैं तो हम इस के उत्तर में पक्षपात रहित होके यह कहते हैं कि निःसन्देह ऐसा करना यथार्थ है परन्तु जहां लों हम ने उनके विषय सीखा है हम को यही ज्ञात हुआ कि उन का काम और ही प्रकार का था अर्थात् संसार को उत्तम और शुद्ध बनाने इत्यादि का उस में अंश किंचल न था। हां एक बात है कि वर्तमान समय में हिन्दुओं में अर्थात् आर्य्य समाजियों में एकाध ऐसी स्त्री हो जाती है जो इस प्रकार का कार्य्य करती है। आर्य्य और हिन्दू में मैं कुछ भेद नहीं समझता क्योंकि आर्य्य समाज भी हिन्दूधर्म्म की एक शाखा अर्थात् डाली है। परन्तु यह प्रभाव सब ख्रीष्टियानधर्म्म का है। वर्तमान समय में बहुधा सब धर्म्मों के लोग ख्रीष्टियानधर्म्म का अनुकरण कर रहे हैं और बहुत उत्तम भी है परन्तु इस प्रकार के कामों में कुछ शक्ति नहीं

क्योंकि शक्ति का सोता तो प्रभु यीशु ख्रीष्ट ही है जिस की सब बातों को तो आप लेते जाते हैं परन्तु उस त्राणकर्त्ता और जगत त्राता से शत्रुता और बिरोध करते चले जाते हैं सो ऐसी बातें उस सड़े फल के समान हैं कि बाहर से तो वह बहुत सुन्दर दिखाई देता है परन्तु भीतर सर्वथा कीड़ों और सड़ाहट से भरा है । इस बात में कोई पक्षपात नहीं है और ज्ञानी पुरुषों को इस पर ध्यान करके बिचार करना चाहिये ॥

मिस लीलावती सिंह का जन्म १४ दिसम्बर सन् १८६८ में गोरखपुर नगर में हुआ था । वह ख्रीष्टियान घराने में से थी क्योंकि उस के परपिता ने जो राजपूत कुल का था इस धर्म्म को ग्रहण किया था इस कारण लीलावती के देखने से ही यह ज्ञात होता था कि वह कैसे कुल से है और न केवल यही परन्तु उस के गुणों से भी यह बिदित होता था । वह अपने डील डैाल में बहुत पोढ़ी और स्वतंत्र स्वभाव की थी । लड़कपन में कन्यायों के साथ खेलते समय उसके व्यवहार से ऐसा प्रगट होता था कि वह योधाओं की सन्तान है परन्तु धन्य है उस धर्म्म को जिस का उस ने अलम्ब किया और उस प्रभु ख्रीष्ट को जिस की वह भक्त थी कि उसके अनुग्रह ने उसको नम्र कोमल शांति और मेल मिलाप का स्वभाव प्रदान किया । यही तो ख्रीष्टियानधर्म्म की श्रेष्ठता है कि उस में यह शक्ति पाई जाती है कि वह स्वभाव को बदल के मनुष्य को नया कर देता अर्थात् संस्कार करने की शक्ति देता है । उस की माता का देहान्त लड़कपन ही में हो गया था इस लिये अपनी प्यारी माता के बिषय केवल वह इतना जानती थी कि वह चमेली के फूलों को बड़ा प्रेम करती और फारसी

भाषा की कविता की बड़ी रसिक थी और माता के ये दो गुण मिस लीलावती के स्वभाव में जीवन भर राज्य करते रहे वह फुलवारी लगाने विरक्षों में पानी देने और अंगरेजी कविता कहने और सुनने से सदा हर्षित रहा करती थी॥

माता के मरने के पीछे वह एक गांव की मिशन पाठशाला में प्रतिदिन पढ़ने को जाया करती थी परन्तु शोक की बात यह थी कि माता के समान कोई ऐसा न था जो उस को शांति देवे और सुधि लेवे क्योंकि पिता तो सरकारी नौकर था इस कारण वह सरकार की सेवा ही से ऐसा अवकाश न पाता था कि अपनी पुत्री की यथा योग्य सुधि लेवे और इस लिये उसने यह उत्तम बिचार किया कि लड़की को मिस थोवर्न साहिबा की कन्या पाठशाला में लखनऊ भेजे यहां पाठशाला में आने से मानो मिस लीलावती ने एक प्रकार की नई सृष्टि देखी। नई नई कन्या जो चारों दिशा से आती थी उन को देखती और उन से मित्रता होती थी परन्तु पाठशालों में उस समय ऐसी उत्तम शिक्षा देनेवाली स्त्रियां न थी जैसी कि आज कल मिलती हैं सो मिस लीलावती का यह कहना कि मैं ने अपने आप को शिक्षा दी किसी प्रकार ठीक है पर मिस थोवर्न साहिबा जो एक उत्तम खीष्टियान थीं उन के उत्तम आचरण और खीष्ट के समान जीवन का उस पर भारी प्रभाव दिन प्रतिदिन होता गया वह मिस थोवर्न साहिबा के बिषय यों लिखती है कि मैं उसे सन् १८८२ से जानने लगी क्योंकि पहिले तो मैं छोटी छोटी कक्षाओं में पढ़ती थी इस कारण उससे मुझ से बहुत संगति न हुई किन्तु अब में बड़ी क्लाश में आई सो मैं उसे जानने लगी वह बर्ष मेरे बड़े आनन्द का था मिस थोवर्न हम को भाषा (अंगरेजी)

सिखाती थी परन्तु जब कभी अंगरेजी कविता पढ़ती थी तो मानो हमारे हृदय बहादुरी और बीरत्व से भर देती थी। जब मैं पहिले पहिल पाठशाला में आई तो एक भी पौधे और फूल का नाम न जानती थी परन्तु आज इस फुलवाड़ी में घूमते हुये मुझे उस की शिक्षा स्मरण आती है वह हमें प्रत्येक फूल पत्ता वृक्ष इत्यादि के बिषय किस प्रकार से समझाया करती थी। मैं उसकी आदित्यवार की धर्म्मशिक्षा को भी किसी प्रकार से भूल नहीं सक्ती क्योंकि उन समयों में वह आत्मिक राज्य के नियमों को बड़ी उत्तमता से समझाती थी। उस की बातों से बहुत अधिक हम को उसका मनोहर और ख्रीष्टियान जीवन शिक्षा दे रहा है वह हर समय आनन्द और प्रत्येक बात से प्रसन्न रहती थी। हमारे कपड़ों से वह जला-पन न रखती थी जैसा कि बहुधा लोगों का स्वभाव है एक दिन की बात है कि मैं एक सुन्दर अंगरेजी कपड़ा पहिरे हुये उस की चौकी के पास खड़ी हुई थी कि इतने में एक मिशनरी साहिब कमरे में आ पहुंचे और उन्होंने मेरे कपड़ों पर दृष्टि करके मिस थोवर्न से यों कहा मिस थोवर्न आप अपनी लड़कियों को अंगरेजी कपड़े पहिरने देती हो ? और तिस पर भी ऐसे उत्तम "इस पर मिस थोवर्न साहिबा ने उन महाशय को उत्तर दिया कि मैं अपनी लड़कियों के खाने पीने और कपड़ों लत्तों के बिषय में हाथ नहीं डालती मैं उन को उत्तम आचरण के सांचे में ढालने का यत्न करती रहती हूं और मेरी आशा है कि शेष सब ठीक हो जावेगा। बैबल के इस पद को वह बहुत प्यार करती थी कि "अक्षर मारता है परन्तु आत्मा जीवन दाता है" और इस आत्मिक शिक्षा से बड़ी आशीष प्राप्त हुई। उस ने सदा मेरे विषय में यह यत्न किया कि मैं

भारतबर्ष को प्यार करूं और सदा उसका पक्ष लूं और अंत यह हुआ कि मैं ने अंगरेजी कपड़े सर्वथा त्याग दिये ॥

मिस थोवर्न साहिबा ने हमें एक और उत्तम बात के बिषय शिक्षा दी सो वह यह है कि हम अपने आप से ख्रीष्टियान-धर्म्म को फैलावें वह हम्में से हर इतवार को दो दो करके अपने साथ गाड़ी पर ले जाया करतीं थीं और हम उन बड़े परदानशीन घरों में छोटी २ कन्याओं को इकट्ठा कर के उस अनुग्रहीत यीशु त्राणकर्त्ता की शिक्षा दिया करती थीं जो छोटे बालकों को प्यार करता है । उन की यह रीति थी कि मार्ग में वह हमें उन बीर मिशनरियों के बिषय जिन्होंने इस संसार में क्या कुछ करके दिखा दिया कथा कहा करती थीं वह यह भी कहा करती थीं और कहते समय उन का मुंह आनन्द के मारे चमकने लगता था कि लड़कियों यदि एक बार तुम ईश्वर की सेवा का स्वाद चीख लो तो तुम्हारा मन किसी और बात की ओर न लगेगा। जितना मिस लीलावती सिंह मिस थोवर्न साहिब के बिषय जानती थी वैसा कदापि कोई दूसरी लड़की न जानती होगी और उन के गुणों का और ख्रीष्टियान जीवन और आचरण का असर लीलावती सिंह पर बहुत ही अच्छी तरह से पड़ा जिस का फल दिन प्रतिदिन बढ़ता ही गया ॥

मिस लीलावती सिंह की विद्या के बिषय इतना ही कहना बस होगा कि उस ने विश्वविद्यालय की सब परीक्षा पूरी अर्थात् एनट्रेंस एफ॰ ए॰ बी॰ ए॰ और एम॰ ए॰ यद्यपि वह बड़ी धनी नहीं थी तैाभी जो कुछ अपने परिश्रम से उपार्जन करती थी। उसका भारी अंश अनाथ लड़कियों की सहायता में खर्च किया करती थी। उसने अपना पूरा जीवन कालेज

की लड़कियों को शिक्षा देने में बिताया और सदा हिन्दुस्तान की स्त्रियों की उन्नति का यत्न करती रहती थी। सन् १८९८ में अधिक काम का भार पड़ने के कारण उसका माथा पिराने लगा और नींद भी न आती थी तब उसे छः महीने की छुट्टी पहाड़ों पर जाने के लिये मिली यहां आने से उसकी शारीरिक दशा की तो क्या परन्तु आत्मिक दशा की भी बड़ी उन्नति हुई यहां एकान्त में आने से और उन ऊंचे २ हिम पर्बतों पर दृष्टि करने से उस ने ईश्वर के महा कार्य्यों को देखा मानों ईश्वर अपने महाकार्य्यों के द्वारा उस पर प्रगट भया और उसका प्रेम उस पर और भी अधिक बढ़ गया। शरीर और आत्मा में बलवान होकर मिस सिंह अपने काम पर फिर लौट आई और इस बात का यत्न किया कि विद्यार्थियों को इस बात की शिक्षा देने में अधिक परिश्रम किया जावे कि वे सत्य ख्रीष्टियान जीवन व्यतीत करें मिस थोवर्न साहिबा की कन्या पाठशाला में ख्रीष्टियान कन्याओं को छोड़ कई हिन्दू और ब्रह्मों भी पढ़ती थीं यद्यपि वे ख्रीष्टियान तो नहीं हुईं परन्तु मिस सिंह की आत्मिक शिक्षा का उन पर बड़ा प्रभाव हुआ परन्तु अंगरेज और यूरोशियन लड़कियों पर जो पहाड़ी पाठशालों से यहां पढ़ने आई थीं और जिन्होंने वहां कोई विद्वान हिन्दुस्तानी स्त्री न देखी थी उनके जीवन पर मिस सिंह की शिक्षा का बड़ा प्रभाव पड़ा क्योंकि उन्हें इस बात का आश्चर्य्य हुआ कि लखनऊ के कालेज में एक हिन्दुस्तानी स्त्री प्रोफेसर है जिस का आदर सन्मान सब करते हैं। उसकी सब से बड़ी इच्छा इस बात की रहा करती थी कि वह हिन्दुस्तानी लड़कियों की हर एक बात में उन्नति देखे॥

मिस सिंह को कालेज में काम करते हुये थोड़े ही दिन बीते थे कि मिस थोवर्न को अमेरिका जाना पड़ा कि वहां

जाके पाठशाला के लिये रुपये इकट्ठे करे और जुलाई सन् १८९९ में मिस थोवर्न और मिस सिंह दोनों अमेरिका पहुंचीं और यद्यपि मिस सिंह वहां केवल दोही बरस रही परन्तु इन बरसों में उस ने बहुत सी नई नई बातें देखीं जिन को वह जीवन भर न भूली। इस के पहिले उसने कभी सभाओं के साम्हने और मण्डलियों में बेधड़क होके व्याख्यान न दिये थे परन्तु ईश्वर के अनुग्रह से वह वहां उत्तम अंगरेजी भाषा में बड़ी मधुरता और मनोहरता के साथ व्याख्यान देने लगी इस से मिस थोवर्न और सोसैटी के सेक्रेटरियों को बड़ा आनन्द और आश्चर्य्य हुआ कि हिन्दुस्तानी स्त्रियां कहां तक उन्नति कर सक्ती हैं इस बात के बिषय भारतबासियों को आनन्द होना और साहस करके अपनी अपनी कन्यों को उत्तम विद्या और ईश्वर का भय सिखाना चाहिये इसी से देश का परिवर्त्तन होता है। जहां जहां अमेरिका में मिस सिंह ने व्याख्यान दिये सुनकर सब लोग आनन्द हुये। बिशप थोवर्न साहिब उनके पहिले व्याख्यान का बखान यों करते हैं कि उस सभा में उसके अर्थात् मिस सिंह के साम्हने तीन सो बड़े बड़े विद्वान पादरी और कदापि एक सहस्त्र बुद्धिमान और चतुर सुननेहारे बैठे थे मिस सिंह अपना उत्तम और मनोहर हिन्दुस्तानी पहिरावा पहिने हुये उस बड़ी सभा के साम्हने अपना व्याख्यान सुनाने को आके उपस्थित हो गई जब सभापति सभा सदों को मिस सिंह के बिषय बता चुका तो मिस सिंह ने मधुर शब्द से स्पष्टता के साथ कि एक बालक भी उसकी समझ ले सभों के साम्हने अपने व्याख्यान के द्वारा यह प्रार्थना की कि भारतबर्ष की स्त्रियों को हायर इज्युकेशन अर्थात् ऊंची शिक्षा देने में अमेरिका निवासी

सहायता करें सुननेहारों ने बड़े आनन्द और आश्चर्य्य से इस व्याख्यान को सुना किन्तु इस बात से उन को बड़ा ही आश्चर्य्य हुआ कि उस की अंगरेजी भाषा बहुत ही उत्तम थी। जहां कहीं मिस सिंह अमेरिका में गई वह आदर और सन्मान से ऐसी ग्रहण की गई मानों कोई देवी अमेरिका में स्वर्ग से उतरी है। पाठशाला के लिये उन्होंने ६०००० रुपया इकट्ठा किया। अब आप अमेरिका के लोगों का परमार्थ और प्रेम देखिये कि वे खीष्टियधर्म्म फैलाने और हिन्दुस्तान की उन्नति के लिये क्या कुछ कर रहे हैं। लीलावती को उन्होंने कैसा बड़ा आदर दिया और सन्मान किया। और यह साठ हजार रुपया प्रायः अमेरिका की स्त्रियों ने ही दिया और निज करके कंगालों ने जब मिस सिंह भारतवर्ष को लौटी तो उसने उन स्त्रियों की उदारता का बखान किया। क्या हमें भी उनका अनुसरण न करना चाहिये कि अपने देश वासियों में विद्या और धर्म्म का डंका बजावें? मिस सिंह की यात्रा से न केवल अमेरिका के परन्तु और स्थानों के लोग भी बहुत प्रसन्न हुये वह यह न जानती थी कि लोग उसका इस प्रकार से आदर सत्कार करेंगे तौ भी ऐसी योग्यता प्राप्त करने और इस प्रकार का आदर मान पाने पर उसने प्रभु के सन्मुख अपने को और भी नम्र किया। उस के स्वभाव में अपस्वार्थ न था पर वह सदा अपने प्रभु को प्रेम करती और उसके धर्म्म की उन्नति चाहती थी उसके हृदय में हिन्दुस्तान की भलाई और अपने मित्रों की भलाई का सदा ध्यान रहता था और इसी कारण हर एक उससे प्रसन्न रहता और उसको प्रेम करता था उसके कोमल स्वभाव के कारण लड़के लड़कियां भी उसे प्रेम करते थे परन्तु उस का काम कठिन था क्योंकि

नये नये लोगों को बार बार व्याख्यान सुनाने और बहुत परिश्रम करने से वह निर्बल होके बीमार पड़ गई किन्तु ईश्वर की बड़ी दया से वह फिर चंगी हुई और भारतवर्ष को लौटी। जहाज़ में बैठने के कुछ काल पहिले न्यूयार्क की एक बड़ी कानफ्रन्स में व्याख्यान दिये इसका बर्णन बिशप थोबर्न साहिब इस प्रकार से करते हैं कि जैसा असर मिस सिंह के व्याख्यानों ने इन हजारों मनुष्यों पर डाला जो न्यूयार्क की इस सभा में इकट्ठे हुये थे वैसा कदापि कहीं दूसरे स्थान में न पड़ा होगा। बड़े २ ज्ञानी और विद्वानों को यह प्रगट हो गया कि जो जाति प्रभु यीशु ख्रीष्ट के धर्म्म को ग्रहण करती है उस की उन्नति होती है। सारी सभा के लोगों को भी यह बात प्रगट हो गई कि यदि हिन्दुस्तान ख्रीष्टियान हो जाय तो क्या कुछ एशिया के लिये न कर सकेगा। दिसम्बर सन् १८९७ में उस ने अपने रोजनामचे में यह लिखा कि मैं ईश्वर से कालेज के खर्च के लिये रुपये की प्रार्थना करती थी परन्तु उस ने मुझे यह बतलाया कि तू अपने को मुझे दे और मेरे समान अपना जीवन बिता उस समय से मेरी प्रार्थना रुपये के लिये नहीं परन्तु इस लिये रहती है कि मैं सब बातों में ख्रीष्ट प्रभु के समान होती जाऊं॥

मिस सिंह को कालेज में काम करते हुये एक बरस हुआ था कि तारीख ३१ अगस्त सन १९०१ में मिस थोबर्न साहिबा का देहान्त हुआ और इस से उस को भारी शोक हुआ। वह लिखती है कि तेईस बरस से अधिक हुये होंगे तब से मैं मिस थोबर्न साहिबा को जानती हूं और उस के साथ रही भी और मैं जो बिना माता की थी वह मेरे लिये माता हो गई थी मैं यह नहीं समझती थी कि वह अमेरिकन और मैं

हिन्दुस्तानी हूं मैं उस के साथ ऐसी स्वतंत्रता से रहती थी जैसे कोई अपनी मा के साथ रहती हो। "यह भारी आदर है आशा है कि प्रत्येक मिशनरी साहिब और साहिबा ऐसाही आदर प्राप्त करें १९०९ में उसने यह कहा कि जब कभी थोवर्न का नाम आ जाता है तो हिन्दुस्तानी लोगों के मन प्रेम से भर जाते हैं कारण यह है कि मिस थोवर्न और विशप थोवर्न हम को प्रेम करते और भरोसा रखते थे और इसी कारण से उन के काम में उन्नति हुई हो सक्ता है कि आप किसी जाति के लिये अपना प्राण भी अर्पण कर देवें परन्तु जब लों आप उस जाति पर भरोसा न करें और अपना प्रेम न दिखावें तो आप का नाम बहुत दिनों तक न चलेगा। ये दोनों हमें प्यार करते और हम पर भरोसा रखते थे और वे अपने उत्तम और ख्रीष्ट समान गुणों से बहुतों को अपने समान बना बना के यहां का काम करने को छोड़ गये॥

मिस थोवर्न के मरने के पीछे कालेज के पूरे काम का प्रबंध मिस सिंह पर आके पड़ा। कालेज की प्रिनसिपल तो एक अमेरिकन मिस साहिबा ही रही पर पूरा २ सारा काम मिस सिंह पर पड़ा जो अब वायस प्रिनसिपल स्थापित की गई थी और काम भी ऐसी उत्तमता से चलाया कि किसी प्रकार की किसी बात में न्यूनता न आई। इस में सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तानी ख्रीष्टियानों में ऐसे लोग हैं जो कार्य्यों का प्रबन्ध भली भांति कर सक्के हैं उन में से एक मिस सिंह ही को देख लीजिये। मिस थोवर्न के समान मिस लीलावती सिंह भी हर एक पाठशाला की लड़की को प्यार करती और इस कारण सभों की प्यारी हो गई थी वह कई लड़कियों की सहायता रुपये पैसे से उन के पढ़ाने में किया करती थी पर उस की इच्छा

सदा यही रही कि यदि उसके पास रुपया होता तो वह हर एक ख्रीष्टियान लड़की को जो भली भांति विद्या प्राप्त करने चाहती है सहायता करती वह सन १९०९ के अपरैल मास में किसी को इस प्रकार की पत्री लिखती है कि मैं १७ बरस की वय से अपने अनाथ भाई, बहिनों और भतीजे, भतीजियों की सहायता कर रही हूं लगभग दस बालकों की रक्षा इस समय ईश्वर की कृपा से मेरे द्वारा होती है इस कारण न मुझे समय रहता है और न मेरे पास धन है कि पुस्तकें खरीद कर पढूं आप जानती हैं कि सीने के काम में मेरा मन किसी रीति से नहीं लगता परन्तु तिस पर भी एक गरमी की ऋतु भर ६० रुपये कमाने के लिये मैं वही काम करती रही जिस से कि अपने एक बीमार अनाथ भाई की दवा दारू में सहायता करूं। वह सहायता करने के कामों में कभी कुड़कुड़ाती न थी और उस की यह भी रीति थी कि ऐसी बातों की शिक्षा औरों को भी दे। ख्रीष्टियान भाई बहिनों को ऐसी २ बातों का नमूना मिस सिंह से लेना बहुत अवश्य है॥

मिस सिंह केवल अपने कुटुम्बियों और पाठशाला की लड़कियों ही की भलाई की चिन्ता में न रहती थी परन्तु यह भी कि वह हिन्दुस्तान की भलाई भी बहुताई से चाहती थी पर वह उन लोगों को देख कर शोक करती थी जो वर्त-मान समयमें ज्ञानरहित उपायोंसे स्वतंत्रता प्राप्त करनेकी चिन्ता कर रहे हैं। उसका यह दृढ़ बिश्वास था कि केवल ख्रीष्टियानधर्म्म ही सब जातियों में मेल मिलाप और एका करा सक्ता है उसका सिद्धान्त यह था कि अपने देश से पाप नाश करना और लोगों को शुद्ध और पवित्र बनाना और उन्हें अच्छे २ कामों में लगाना यही देश की भलाई चाहना और प्यार करना है॥

सन् १९०१ में वह एक सभा में जाने के लिये जो जापान में होने वाली थी चुनी गई । इस में सारे संसार से ख्रीष्टियान स्त्री पुरुष आके उपस्थित हुये थे । और मिस सिंह ने सभों को अपने व्याख्यानो और उत्तम आचरण से प्रसन्न किया । वह कहती है कि जापान देश बड़ा सुन्दर है लोग अपने घरों और सड़कों गलियों और मार्गों को अति स्वच्छता से रखते हैं । स्त्री पुरुष और बालक फूल पत्तों को बहुत प्यार करते हैं परन्तु उस देश की सब से उत्तम बात जो मिस सिंह के मन में गड़ी सो जापानियों की स्वतंत्रता थी और यह उनके कामों से प्रगट होती थी क्योंकि कई ख्रीष्टियान मंडलियां ऐसी हैं जो अपने खर्च का आप प्रबंध कर लेती हैं । यदि हम जापान की यात्रा का पूरा बखान करेंगे तो समय अधिक व्यतीत हो जायगा इस कारण उसे हम छोड़ देते हैं । इस जापानी कानफ़्रान्स में मिस सिंह ने जापानी स्त्रियों की बड़ी प्रशंसा की है परन्तु उस के हृदय में अपने देश की स्त्रियों के बिषय कुछ शोक के चिन्ह जान पड़ते थे वह जापान के बिषय कहती है कि हां यहां सब कुछ ठीक और सुन्दर है परन्तु मेरी दशा तो उस माता के समान है जो सदा अपने रोगी और निर्बल बच्चे को ध्यान में रखती है पर दूसरों के सुन्दर और हृष्ट पुष्ट बालकों का उसे ध्यान नहीं रहता । स्त्रियों की सभा में उस ने इस बात की प्रार्थना की कि हिन्दुस्तानी स्त्रियों को उत्तम और भारी काम दिये जावें हां यह तो सच है कि हिन्दुस्तानी लड़कियों में अब लों ऐसी विद्वान नहीं मिलती कि भारी कामों का बोझा उठावें और जो हैं भी उन को काम नहीं मिलता इस कारण प्रार्थना है कि वे इस काम में भागी की जावें जिस में मंडली का सुधार

होवे। और इस रीति से एक पक्की और बलवान मंडली हिन्दुस्तान में हो जाय॥

सन् १९०८ में मिस सिंह ने एक व्याख्यान सिनसिनटी में दिया जिस में वह पहिले तो जापान और हिन्दुस्तान की स्त्रियों को बराबर समझने से कुछ झिझकी सी जान पड़ी क्योंकि उस देश में सौ स्त्रियों में से निन्नानवे पाठशाला में पढ़ती हैं परन्तु हिन्दुस्तान में केवल एक हज़ार में से केवल सात ही स्त्री पढ़ी लिखी अथवा पाठशाला को जानेवाली हैं परन्तु जब मैं ने पण्डिता रामाबाई, सोराब जी का घराना मिस चक्रबती और बीसों औरों का ध्यान किया तो मुझे साहस हुआ और मैं ने समझा कि हमारे देश में भी ऐसी २ स्त्रियां हैं जो विद्या और ज्ञान में और और देश बासियों से कुछ कम नहीं हैं और हमें बिश्वास है कि ईश्वर ऐसा दिन लावेगा कि इसी भारतबर्ष की स्त्रियों की शिक्षा से सारा एशिया प्रकाश हो जावेगा॥

निदान मिस सिंह को देशों देश की यात्रा करने से यह लाभ हुआ कि उस ने अपने देश और निज करके अपने वर्ग की भलाई सोची। हिन्दुस्तान उस का प्यारा था। प्रत्येक स्त्री और कन्या की केवल वह भलाई ही चाहती थी। पाठशाला की और कालेज की लड़कियां उसे ऐसा प्यार और दुलार करती थीं माने वह उन की माता और बड़ी बहिन हैं और ये सब गुण उस में कहां से उत्पन्न हुये। यह सब कुछ ख्रीष्टियधर्म्म का प्रभाव था। हिन्दुस्तान के लखनऊ योवर्न कालेज में तो उस का काम ही था परन्तु उस ने यूरुप अमेरिका और जापान में भी जाकर यह गुहार लगाई कि

हिन्दुस्तान की स्त्रियां योग्य हैं उन को विद्या और सत्य धर्म्म में शिक्षा देने की आप लोग सहायता कीजिये ॥

सो भारत निवासी भाईयो, लड़कियों और स्त्रियों के पढ़ाने लिखाने के लाभ प्रगट हैं और अब बुद्धिमान लोग इस बात को जानते जाते हैं परन्तु तिस पर भी अनगिनित ऐसे हैं जो स्त्री और कन्या शिक्षा का बिरोध करते हैं। वे कहते हैं कि स्त्री विद्वान होने से अपने पतियों की अवज्ञा करती हैं घर के काम काज में मन नहीं लगातीं अपने निज धर्म्म को तुच्छ समझने लगतीं और अहंकारी हो जाती हैं परन्तु यह तो भूल है ऐसा कदापि न समझना चाहिये। आप के धर्म्म में भी ऐसी सैकड़ों स्त्रियां हो गई और अब भी हैं उन में से किसी की यह दशा न थी जो आप बिचार करते हैं। विद्या पढ़ने से स्त्रियां बिगड़ती नहीं परन्तु सुधर जाती हैं। पाप से दुःख से अज्ञानता से निर्धनता और दरिद्रता से आप उसी समय त्राण पावेंगे जब कि आप के देश की बहू बेटियां और माता इत्यादि विद्वान और सत्य धर्म्म को प्राप्त करेंगी। हां तब ही आप अपने मनुष्य जन्म पाने का सुख पावेंगे ॥

मिस लीलावती सिंह के पवित्र जीवन और उत्तम कामों का हम और बहुत बखान कर सक्ते हैं परन्तु कदापि आप पढ़ते २ थक गये और नहीं चाहते कि आप को और थकावें सो हम इतना और कहेंगे कि वह सन् १९०८ अगस्त महीने में फिर दूसरी बार अमेरिका देश को गई और उस ने वहां के लोगों को उभारने, शिक्षा देने और व्याख्यान देने इत्यादि में इतना भारी परिश्रम किया कि रोगी हो गई यह सब भारतबर्ष की स्त्री और कन्यायों के लिये था। इस में सन्देह नहीं कि इस समय भी अमेरिकन सज्जनों ने उसे बड़ा आदर

दिया परन्तु उस का काम इस संसार में समाप्त हुआ और तारीख ९ मई सन् १९०९ में दिन के दस बजे अमेरिका देश के बिख्यात नगर शिकागों में उस का देहान्त हुआ वहां एक मनोहर पहाड़ी पर जिस के ऊपर से सुन्दर नदी और छोटी छोटी पहाड़ियां दिखाई देती हैं उस की समाधि बनाई गई है। यद्यपि वहां उस का मृतक शरीर उस समाधि में है तो भी वह समाधि से सहस्त्रों बुद्धिमान अमेरिकन स्त्रियों को ब्याख्यान दे रही है और देती रहेगी कि हे अमेरिकन ख्रीष्टियान बहिनों हमारे हिन्दुस्तान की स्त्रियों को प्रकाश दो उस की समाधि पर यह लिखा गया है "ईश्वर की शांति उस के मुख पर दिखाई देती थी" निःसन्देह उस ने अपने स्वामी के काम में शांति और बिश्राम प्राप्त किया उस की बैबल में एक पद यह है जिस पर उस ने चिन्ह लगाया है॥

हे प्यारो अभी हम ईश्वर के सन्तान हैं और अब लों यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या होंगे परन्तु जानते हैं कि जो प्रगट होय तो हम उस के समान होंगे क्योंकि उस को जैसा वह है तैसा देखेंगे॥

Printed by J. Pratt, at the Indian Christian Press,
Allahabad.